SCANNED

अशआर
रसधारः

श्रेयः खण्डः

—शा. सत्यदासः

❋ विज्ञप्तिः ❋

उर्दूसाहित्यस्य गजलेभ्यो रोचकपद्यानां (शेरों का) सङ्कलनं कृत्वा तत्समच्छन्दस्सु तेषां संस्कृतपद्यानुवादाः सत्यदासोपाह्वेन शान्तप्रकाशेन मया विहिताः । एतेभ्यः केचन संविद् (बम्बई), शारदा (पूना), संगमः (वर्धा), पारिजातम् (कानपुर), संस्कृतामृतम् (दिल्ली) आदिपत्रिकासु प्रकाशिता अपि ।

अद्यावधि विरचितेभ्यः संस्कृतपद्यानुवादेभ्यः "अशआररसधारः" इत्यभिधस्य ग्रन्थस्यैकस्य पाण्डुलिपिः सज्जीकृतास्ति । अभिनव प्रयोगात्मक एष ग्रन्थः खण्डद्वये विभक्तोऽस्ति श्रेयः खण्डः प्रेयः खण्डश्च । प्रत्येकखण्डेऽनूदितसंस्कृतपद्यानां शतत्रयी विराजते । एवं सम्भूय षट्शती सञ्जाता ।

एतस्य प्रकाशनार्थमधुना कोऽपि संस्कृतग्रन्थप्रकाशकोऽन्विष्यते । सम्प्रदायनिरपेक्षेऽस्मदीयराष्ट्रे राष्ट्रैक्यानुभावकस्य शिक्षाप्रदस्य सर्वरसात्मकस्य मनोरञ्जकस्यास्य ग्रंथस्योभयोः खण्डयोर्युगपत् पृथक् पृथग्वा प्रकाशनं यश्चिकीर्षति सः प्रकाशकः सङ्केतेऽधोलिखिते पत्राचारेण करोतु सम्पर्कमवश्यमाशु ।

अपरञ्चैतदवधेयं यच्छ्रेयः खण्डस्य प्रस्तुतस्य प्रकाशनानन्तरमधुना द्वितीयस्य प्रेयः खण्डस्य प्रकाशनाय प्राथम्यं दास्यते खलु ।

सङ्केतः
ग्रेसिम विद्यालयः
बिरलाग्रामः - नागदा जं.
456331 (म.प्र.)

—शा. सत्यदासः
(सङ्कलयितानुवादकश्च)

।। नमोऽस्तु सत्येश्वराय ।।

अशआर-रसधारः

श्रेयः खण्डः

[संस्कृतमें रूपान्तरित तीन सौ शेर]

●

सङ्कलयितानुवादकश्च

शान्तप्रकाशः सत्यदासः

[काव्यतीर्थ., एम्. ए. (संस्कृते राजनीतौच)]

सी-5/एचीसी टाउन
बिरलाग्राम-नागदा जं०
456331 (म०प्र०)

●

प्रकाशक:

छन्दराज "पारदर्शी"

कुलदीप प्रकाशन

261/4, ताम्बावती मार्ग,

उदयपुर - 313001

☐ पुस्तक — अशआर-रसधारः [श्रेयः खण्डः]

☐ विधा — पद्यात्मक सूक्तियाँ ।

☐ वस्तु — संस्कृतमें अनूदित चुने हुए तीन सौ उर्दू शेरोंका देवनागरीलिपि में संकलन

☐ संकलयितानुवादकश्च— शान्तप्रकाशः सत्यदासः

☐ प्रथम संस्करण — 1000 प्रतियाँ

- वीरसँव्वत् — 2515
- विक्रमसँव्वत् — 2045
- राजेन्द्रसँव्वत् — 0082
- ईस्वी सन् — 1989
- इतिहाससँव्वत् — 11989

☐ मूल्य — 10 रुपया

❀ सूचना ❀

पुनः प्रकाशन, संशोधन, परिवर्त्तन, परिवर्धन आदि के समस्त अधिकार अनुवादक के स्वाधीन हैं !

☐ प्रकाशक — कुलदीप प्रकाशन, उदयपुर

☐ मुद्रक — जगदीप डाँगी 'हर्षदर्शी' द्वारा
पारदर्शी प्रिन्टर्स
261, ताम्बावती मार्ग, उदयपुर-३१३००१

अनुवादक की ओर से

किसी जगह एक सरल शेर पढ़ने में आया था :—

जिसे देखिये हमसे बढ़कर है 'अहमक' !
यहाँ हम किसे अपने से कम बतायें ?

पढ़ते ही कण्ठस्थ हो गया कि सहसा एक विचार कौंधा— "क्या इसे संस्कृतपद्य में रूपान्तरित किया जा सकता है ?"

भीतर से उत्तर मिला —"क्यों नहीं ? यदि तन्मय होकर प्रयास किया जाय तो असाध्य या असम्भव जैसा कुछ नहीं रह सकता।"

किया प्रयास। फलस्वरूप कुछ ही मिनटों में यह पद्य बन गया-

यमेवावलोकेऽस्ति मत्तोऽधिकः सः
वयस्या ! वदेयं नरं कं हि न्यूनम् ?

इसी से मिलता जुलता एक शेर 'जौक' का भी याद आया —

ऐ जौक ! किसे चश्मे हिकारत से देखिये ?
सब हमसे जियादा हैं कोई हमसे कम नहीं !

इसका रूपान्तर यों बना -

पश्येम 'जौक' ! हीनदृशा जगत्यत्र कम् ?
सर्वेऽपि वरा नास्ति कोऽपि हीनतरोऽस्मत् !

इसके बाद तो समय-समय पर जितने भी शेर याद आते रहे, रूपान्तरित होते रहे।

खाचरोद-चातुर्मास (1987) के समय मेरे मुँहसे ऐसे ही कुछ शेरोंका संस्कृत - अनुवाद सुनकर साहित्यप्रेमी आचार्य श्रीमज्जयन्तसेन सूरिजी म. सा. 'मधुकर' ने अपनी हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा था — "आप अधिक से अधिक शेरों का चयन करके उनका इसी प्रकार संस्कृत में रूपान्तरण करते रहिये। मैं सोचता हूं कि अभिनव प्रयोगात्मक होनेसे यह एक ऐसा अभूतपूर्व अद्भुत एवं उपयोगी संकलन बन जायगा, जो साहित्यिक-संसार में चिरस्मरणीय रहेगा !"

इस प्रशंसात्मक प्रेरणा से प्रोत्साहित होकर मैं इस कार्य में जुट गया। इसके लिए पुस्तकालयों से सम्पर्क साधकर गजलोंके बहुत-से संकलन देखे, विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित गजलें पढ़ीं, अनेक मुशायरे सुने और उन सबसे दिल छूने वाले शेरों का चयन किया। साथ ही साथ संस्कृतमें उनके रूपान्तरणका कार्य भी चलता रहा।

शेरों में आ, ई, ए, ऐ, ओ और औ जैसे दो मात्राओं वाले दीर्घ (गुरु) स्वरों को भी कहीं-कहीं एक मात्रामें पढ़ा जाता है, परन्तु

संस्कृत में ऐसा करनेकी अनुमति नहीं है, इसलिए अनुवाद करते समय इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि जिस शेरमें जहाँ जितनी मात्राएँ उच्चारण की दृष्टि से अपेक्षित हैं, उस शेरमें वहाँ उतनी ही मात्राओं वाले शब्द संस्कृत - रूपान्तरण में प्रयुक्त हों जिससे कहीं भी दीर्घ का उच्चारण ह्रस्व जैसा न करना पड़े और वजन भी बहर (छन्द) के अनुसार बराबर बना रहे।

कुछ गजलें तो पूरी की पूरी अनुदित हो गई हैं, क्योंकि उनका कोई भी शेर छोड़ने लायक नहीं लगा, फिर भी किसी गजल के सारे शेर यहाँ एकत्र नहीं मिल सकते, क्योंकि इस पुस्तक में अनुदित पद्य अकारादि क्रम से प्रकाशित किये गये हैं।

अब तक संस्कृतमें रूपान्तरित शेरोंको दो खण्डों में विभाजित किया गया है — श्रेयः खण्डः और प्रेयः खण्ड। श्रेयः खण्डः में ऐसे सामान्य शेर हैं, जो चर्चाओं, भाषणों निबन्धों और प्रवचनों में प्रयुक्त हो सकते हैं और अपने वक्तृत्व या वक्तव्य को प्रभावक बना सकते हैं। (दूसरे प्रेयः खण्ड में शृङ्गार, सौन्दर्य, प्रेम, हास्य, व्यंग्य आदि विविध विषयों पर विशिष्ट रसीले मनोरंजक शेर हैं) यह केवल श्रेयः खण्डः है, जिसमें शिक्षाप्रद एवं प्रेरक कुल तीन सौ शेरोंको संस्कृत अनुवाद के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है।

आशा ही नहीं, पूरा विश्वास है कि हिन्दी, संस्कृत और उर्दू से परिचित दुनियाके सभी स्त्री पुरुष इन शेरोंके भावों का भलीभाँति रसास्वादन कर सकेंगे और इस पुस्तक के द्वितीय "प्रेयः खण्ड" के भी शीघ्र प्रकाशन के लिए संस्कृतानुवादक को विवश कर देंगे।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशक देश के प्रख्यात आशुकविरत्न हास्य-व्यंग्यावतार, छन्दराज ओमप्रकाश डाँगो "पारदर्शी" का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने अल्प समय में अपनी ही प्रकाशन संस्था कुलदीप प्रकाशन से इसे शुद्ध, सुन्दर एवं आकर्षक रूप में प्रकाशित किया है। इत्यलम्!

—शा. 'सत्यदास'
संस्कृत शिक्षक

ग्रेसिम विद्यालय
बिरलाग्राम-नागदा जं.
456331 (म.प्र.)

अशआर - रसधारः

श्रेयः खण्डः

[मूलम्]

(1)

सारी दुनिया उपवन भी है, सारी दुनिया जंगल भी
उनके हाथों फूल लगे हैं, पहुँच गये जो खारों तक। —कुँ. वेचैन

(2)

दिल तो आँगन है प्यारके घरका
कोई दिवार क्यों उठाते हो ? — कुँअर वेचैन

(3)

हजार नाकामियाँ हों 'नश्तर !'
हजार गुमराहियाँ हों लेकिन
तलाशे मंजिल अगर है दिलसे
तो एक दिन लाजिमी मिलेगी। — नश्तर

(4)

आपसे भी अधिक फले फूले
देश की क्या मजाल है साहब ! — प्रदीप चौबे

(5)

उजले अक्षर इस दुनियाको दीख नहीं पाये लेकिन
जिनके चेहरों पर स्याही थी, पहुँच गये अखबारों तक! —कुँ. वेचैन

(6)

आज तेरा है कल हमारा है
सीधा-सादा हिसाब है प्यारे ! —माणिक वर्मा

(7)

बात करते जो पल ये बीत गया
आज वो कल कहाँसे लाओगे ? —जगदीश श्रीवास्तव

[संस्कृतम्]

(1)

अखिलं जगदपि जंगलमिव स्यादुपवनमपि तदसन्दिग्धम्
तेषां पाणिषु पुष्पदलं ये कण्टकपर्यन्तं प्राप्ताः

(2)

अङ्गणं प्रेमसद्मनो चेतः
क्वापि निर्मीयतेऽत्र किं भित्तिः ?

(3)

अतीव वैफल्यमस्तु 'नश्तर् !'
सहस्रशः सन्तु दिग्भ्रमा वा
तथाप्यवश्यं लभेत लक्ष्यम्
क्रियेत चेच्चेतसा प्रयासः !

(4)

अत्रभवतोऽधिकं फलेत् फुल्लेत्
तादृशी शक्तिरस्ति देशे का ?

(5)

अदृश्यन्त नोज्ज्वला अक्षरा वसुधायामस्यां लोकैः
समाचारपत्रेषु प्रविष्टा ये मसिमलिनमुखा आसन् !

(6)

अद्य तव श्वोऽस्ति मामकीनश्च
आशुगम्या विभाति गणनैषा !

(7)

अद्य यद् गतं व्यर्थवार्त्तायाम्
श्वः क्षणन्तत्तु कुत्र लप्स्यध्वे ?

(8)

हर कोई हर किसीसे डरता है
एकता लाजवाब है प्यारे ! —माणिक वर्मा

(9)

जगके दुखमें रोऊँ निशिदिन
पर अपना दुख न रूला पाये
जग - सुखको अपना सुख समझूँ
सुखियोंसे मनमें डाह न हो —स्वामी सत्यभक्त

(10)

अन्धा नहीं तो और क्या जो अन्धकारमें
दर्पणको साथ - साथ लिये घूम रहा है ? —कुँअर बेचैन

(11)

आसान है औरों पर इल्जाम लगा देना
अपने ही गरेबाँमें झाँको तो मजा आये।

(12)

चाहे घर - घर अपमान मिले
चाहे घर - घर सन्मान मिले
दोनोंमें ही मुसकान रहे
निष्फलतामें भी आह न हो —स्वामी सत्यभक्त

(13)

बहुत मद्धिम बहुत कम है
मगर फिर भी ये क्या कम है ?
किसी सूरजसे माँगी तो
नहीं ये रोशनी हमने ?

(14)

हमारी आबरूका प्रश्न है, सबसे न कह देना
वो बातें हमने जो तुमसे अभी खुल कर कहीं बाबा ! —कुँ. बेचैन

(8)

अद्य सर्वो बिभेति सर्वेभ्यः
दृश्यते कियत्यपूर्वा समता ?

(9)

अनुकम्पे परकीये दुःखे
स्वीयं दुःखं नो कम्पयताम्
परकीयसुखं मन्ये स्वसुखम्
सुखिनो दृष्ट्वा न भवेदीर्ष्या

(10)

अन्धो न चेत्स कथय कथङ्कारममायाम्
सह दर्पणेन योऽत्र परिभ्रमति भूतले ?

(11)

अन्येषु भवेन्नित्यं दोषारोपः सुकरः
स्वात्मनि कदापि पश्येदनुभूयते यथार्थम्

(12)

अपमानं वा कामं भूयात्
सन्मानं वा सदने सदने
उभयावस्थायामस्तु स्मिति-
र्नो वैफल्येऽपि विलापः स्यात्

(13)

अमन्दो नास्ति यद्यपि भोः
तथाप्येषोऽस्ति किं न्यूनः ?
प्रकाशो याचितोऽस्माभि-
र्न कश्चिच्चन्द्रवत्सूर्यात् ?

(14)

अयं प्रश्नोऽस्ति नः कीर्त्तेर्न किञ्चिद् भाषतां सर्वान्
यदस्माभिर्हि वार्त्ताः स्पष्टमुक्तास्तास्तु भो भिक्षो !

(15)

ये दुनिया है ऐ शाद ! नाहक न उलझो
हर इक कुछ तो अपनी-सी आखिर कहेगा ! —शाद

(16)

न लुटता दिनको तो कब रातको यूँ बेखबर सोता ?
रहा खटका न चोरी का दुआ देता हूं रहजन को ! —गालिब

(17)

बहुत मशहूर है जरूर आयें आप यहाँ
ये मुल्क देखने लायक तो है, हसीन नहीं ! —दुष्यन्तकुमार

(18)

आँसुओं से लिपटके सो जाये
ऐसा काजल कहाँसे लाओगे ? —जगदीश श्रीवास्तव

(19)

यार क्या जिंदगी है सूरजकी ?
सुब्हसे शाम तक जला करना ! —अमीर कजलबाश

(20)

उसमें खुशबू हैं तो फिर सबको ही खुशबू देगा
फूल धरतीपे खिले चाहे खिले पानी में ! — कुँअर बेचैन

(21)

आदमीयत और शै है इल्म है, कुछ और चीज
कितना तोतेको पढ़ाया, पर वो हैवाँ ही रहा !

(22)

उसका मिलना है, मिले जो बेगरज
यों तो सब मिलते है अपने कामसे — नश्तर हंगामी

(23)

जिनका अपना नहीं कोई चेहरा
उनके चेहरे पचास हैं यारों —प्रदीप चौबे

(15)

अरे ! मा वृथा क्लिश्य विश्वे वदेत् त्वाम्
यथाबुद्धि प्रत्येक एवात्र किञ्चित् !

(16)

अलुण्ठ्ये चेन्न दिवसेऽनवहितः कथमस्वपं रात्रौ ?
भयं चौर्यस्य नष्टमभूच्छुभं तस्कराणां कांक्षे !

(17)

अवश्यमागच्छन्त्वस्त्यतीव विख्यातः
अयं न रम्यो देशस्तथापि द्रष्टव्यः !

(18)

अश्रुभिः परिष्वज्य यच्छेते
कज्जलं तत्तु कुत्र लप्स्यध्वे ?

(19)

अस्ति किं जीवनं रवेर्मित्र !
प्रातरारभ्य सन्ततं दहनम् !

(20)

अस्ति तस्मिन् सुरभिश्चेद् दास्यति सर्वेभ्यः
पुष्पमिह विकसेत् कामं भूमौ सलिले वा !

(21)

अस्ति मानवताऽपरैवाऽपरा बहुशास्त्रज्ञता
पाठितोऽपि हि शुकोऽत्यन्तं खगत्वं नैवात्यजत् !

(22)

अस्ति मिलनं स्वार्थहीनं यद् भवेत्
स्वार्थतस्तु मिलन्ति सर्वेऽप्यन्यथा

(23)

अस्ति येषान्तु नाकृतिः स्वीया
सन्ति तेषां शतं मुखाकृतयः !

(24)

अपना हो फिराक कि औरोंका
कुछ बात ही ऐसी आन पड़ी
मैं आज गजलके पर्देमें
दुख-दर्द सुनाने बैठा हूँ — फिराक गोरखपुरी

(25)

आफाकमें हँस - हँसकर जीना ही तो मुश्किल है
आसान है रो-रोकर हस्ती को फना करना

(26)

मुँहमें हम यूँ जुबान रखते हैं
लोग गूँगा हमें समझते हैं - सूर्यभानु गुप्त

(27)

इस तरह तै हमने की हैं मंजिलें
गिर गये, गिरकर उठे, उठकर चले !

(28)

मिट्टीके बर्त्तनोंकी तरह ही हमें 'कुँअर!'
इक दिन उतार देगा कुम्भकार चाकसे — कुँअर बेचैन

(29)

इस सावनमें हल बेचारा माटी छूनेको तरसा
वर्षापर सबकी आँखें हैं आँखोंमें केवल वर्षा —सुरेन्द्र शर्मा

(30)

गजब है कि दिलमें तो रक्खी कदूरत
करो मुँहपै हमसे सफाई की बातें ! —जफर

(31)

तअज्जुब है कि जब हम ताकते परवाज खो बैठे
कफसने यूँ कहा चुपकेसे -'जा आजाद करता हूँ !' —साहिर

(24)

अस्तु स्वीयं परकीयं वा
जाता तु मदीया स्थितिरेषा
उपविष्टः काव्य-यवनिकाया-
माविष्कुर्वे किञ्चिद् दुःखम्

(25)

अस्त्येव जगति विहसन् जीवनमतीव कठिनम्
क्रन्दन्नहर्निशं तद् यापनमतीव सरलम्

(26)

अस्मदाननेऽस्तीदृशी जिह्वा
जानतेऽस्मान् जनास्तया मूकान्

(27)

अस्मदीया लक्ष्यसिद्धिरभूत्कथम्
पतित्वा चोत्थाय चलिता धाविताः !

(28)

अस्मानिह सर्वानपि मृद्भाण्डवत् 'कुँअर्!'
अवतारयिता भवचक्रात् काल - कुलालः

(29)

अस्मिन् श्रावणमासे हलो वराकः स्प्रष्टुं मृदमैच्छत्
लोचनानि वर्षासु समेषां लोचनेषु मात्रं वर्षाः

(30)

अहो मानसे शत्रुताया निवासः
तथापि क्रियन्ते मिथः प्रेमवार्त्ताः!

(31)

अहो यस्मिन् क्षणेऽस्मच्छक्तिरुड्डयनस्य नष्टाऽभूत्
तदा मां पञ्जरोऽकथयच्छनैः "कुर्वे स्वतन्त्रं त्वाम् !"

(32)

यों तो मैंने ही लिखी, थी, पर न जाने क्या हुआ ?
मैं बहुत रोया स्वयं अपनी कथा पढ़ने के बाद !

(33)

आदमीका जमीर होता है
आप ये कबकी बात करते हैं ? —सूर्यभानु गुप्त

(34)

मेरे ही अपने लोग 'कुंअर' भूलने लगे
उस वक्त याद आई बहुत आपकी मुझे —कुँअर बेचैन

(35)

पहले तो स्याह रातके पलको बिदा किया
फिर हँसके मेरे आजने कलको बिदा किया —कुँअर बेचैन

(36)

उम्रे दराज़ माँगकर लाये थे चार दिन
दो आरजूमें कट गये, दो इन्तजार में ! —जफ़र

(37)

लाई हयात, आये, कज़ा ले चली, चले !
अपनी खुशी न आये, न अपनी खुशी चले ! —शकील बदायूँनी

(38)

प्यार पूजाघर था पहले, अब तो बस बाजार है
जिसको देखो, वही बिकनेके लिए तैयार है —कुँअर बेचैन

(39)

बहती नदीके पास था, इक ज़िंदग़ीका पेड़
आई ज़रा-सी बाढ़ तो जड़से उखड़ गया ! —कुँअर बेचैन

(40)

अकेलेमें मैं अक्सर सोचता हूं
बदलते क्यों मेरे स्वर हैं हजारों ? —ज़हीर कुरैशी

(32)

आत्मनः सम्यक् कथां स्वयमेव यद्यपि लिखितवान्
तामधीत्य कथं न जानेऽशून्यवर्षमहं भृशम् !

(33)

आत्मनोऽप्यस्ति मानवेऽस्तित्वम्
कस्य कालस्य वृत्तमेतद् भोः ?

(34)

आत्मीयजना एव यदा व्यस्मरन् 'कुँअर् !'
सत्यं तदा भवन्तमस्मरम् पुनः पुनः

(35)

आदौ तु कृष्णयामिनीपलं वियोजितम्
पश्चाद् विहस्य दिनेनाद्य ह्यो वियोजितः

(36)

आनीतवांश्चिरायुरहं दिनचतुष्टयम्
इच्छायां द्वे दिने गते द्वे प्रतीक्षणे !

(37)

आनीय स्वीयजन्मना स्वमृत्युना हताः !
न स्वेच्छया वयं क्वचित्समागता गताः !

(38)

आपणं तत्प्रेम, पूजासदनमासीद् यत्पुरा
यं हि यां पश्येम सः सा विक्रयार्थं दृश्यते

(39)

आसीत्तटिनीतटे योऽपि जीवनवृक्षः
स्वल्पे परिवाहेऽपि तूर्णमुदखन्यत सः !

(40)

इदानीं चिन्तयेऽहं रहसि प्रायः
स्वराः परिवर्त्तिता मे किं सहस्रम् ?

(41)

यहाँ उड़नेके अवसर हैं हजारों !
किराये पर यहाँ पर हैं हजारों ! —ज़हीर कुरैशी

(42)

मुझको क्या मालूम था अन्धा बना देगी मुझे
मैंने एक दिन आईना दिखला दिया था धूपको —कुँअर बेचैन

(43)

उठ बन्दगी से मालिके तकदीर बनके देख
क्या वसवसा अजाबका, क्या काविशे नजात? —फिराक गोरखपुरी

(44)

पहिचान कर वो मुझको उठाकर ही ले गई
कितनी ही बार मौतका देखा हुआ था मैं ! —कुँअर बेचैन

(45)

जिसने कुछ एहसाँ किया, एक बोझ सर पर धर दिया !
सरसे तिनका क्या उतरा ? सरपे छप्पर धर दिया !

(46)

कीजे न दसमें बैठके आपसकी बातचीत
पहुँचेगी दस हजार जगह दसकी बातचीत ! —जफर

(47)

बनाकर फकीरों का हम भेस 'गालिब'
तमाशा - ए - अहले करम देखते हैं —गालिब

(48)

एक दिन एक पलको वो मेरे ही अन्दर मिल गया
मैंने इस छोटे- से लम्हेमें ही सदियाँ ढूंढ़ लीं ! —कुँअर बेचैन

(49)

एक ही पाँवपै ठहरोगे तो थक जाओगे
धीरे-धीरे ही सही, राहपर चलते रहिये —कुँअर बेचैन

(41)

इहोड्डयनाय चावसराः सहस्रम्
सुपक्षाः सन्ति धनलभ्याः सहस्रम्

(42)

ईदृशं सोऽन्धीकरिष्यति मामवागच्छं न भोः
आसमेकस्मिन् दिने घर्माय दर्शितदर्पणः

(43)

उत्तिष्ठ प्रार्थनाभ्यो भव भाग्यविधाता
किं कोपभयं कस्त्वदीयमुक्तिप्रयासः ?

(44)

उत्थाप्य मृत्युरनयदभिज्ञाय मां स्वयम्
तेनासमिह विलोकितो यतो मुहुर्मुहुः !

(45)

उपकृतं किञ्चिदपि यैस्तैर्भारमेकं स्थापितम् !
तृणं यैरवतारितं तैः शिरसि वनमारोपितम् !

(46)

उपविश्य दशसु नृषु नो कथ्यं स्वरहस्यम्
गन्ताऽन्यथाऽऽशु सहस्रेषु मनुष्येषु तत् !

(47)

उरीकृत्य संन्यासिवेषं तु 'गालिब्!'
प्रपश्यामि श्रीमत्कृपादृष्टिक्रीडाः

(48)

एकदिवसे मदीयेऽन्तस्तलेऽदृश्यत सः क्षणम्
लघुतमेऽस्मिन्नेव कालेऽन्वेषिताः शत्यो मया !

(49)

एकपादस्थितो भवान् भविष्यति क्लान्तः
स्वीयमार्गे शनैः शनैरपीह गन्तव्यम्

(50)

फूल की गन्ध तकको तरसते हैं हम
आपके नाम सारा चमन है यहाँ ! - ह. नायडू

(51)

है इल्तजा यही कि अगर तू करम करे
वह बात दे जुबाँमें कि दिलपर असर करे

(52)

इतना बुलंद अपनी निगाहोंको कीजिये
कतरा भी आप देखें तो दरिया दिखाई दे !

(53)

लब सी दिये हैं ता न शिकायत करे कोई
लेकिन हर एक जख्मके मुँहमें जुबाँ है आज ! – सरदार जाफरी

(54)

चप्पा चप्पा हुआ विषैला
किसने ऐसा विष बाँटा ?
मरघट-मरघट चहल-पहल है
पनघट - पनघट सन्नाटा ! —सुरेन्द्र शर्मा

(55)

जरा सोचो कि मुँह तक रोटियाँ क्यूँ आ नहीं पाईं ?
तुम्हारी ही कलाईमें कहीं कुछ गड़बड़ी होगी ! – कुँ. बेचैन

(56)

गरजपरस्त जहाँमें वफा तलाश न कर
ये शै बनी थी किसी दूसरे जहाँके लिए !

(57)

कभी ये आग लाते हैं, कभी बिजली गिराते हैं !
इन्हें तकलीफ है यह कि ये तिनके बच क्यूँ जाते हैं ?

(50)

एक पुष्पस्य प्राप्त्यै सतृष्णा वयम्
पूर्णमुद्यानमेतद् भवद्धस्तयोः !

(51)

एतत्तु प्रार्थ्यते मया भवेद् भवत्कृपा
वाणीं ददातु श्रोतृवृन्दहृदाकर्षिकाम्

(52)

एतादृशी भवेत्स्वचक्षुषोर्विशालता
दृश्येत यया सलिलबिन्दुरपि पयोधिवत् !

(53)

ओष्ठौ तु मुद्रितौ हि भवेत्कोऽपि न पिशुनः
जिह्वा परन्तु दृश्यतेऽद्य भो व्रणे व्रणे !

(54)

कणशो भूमिर्विषपूर्णाभूत्
को व्यतरद् विषमेतादृक्
प्रतिश्मशानं जनसम्मर्द्दः
प्रतिकूपं ध्वनिराहित्यम्

(55)

कथङ्कारं न याता रोटिकास्तव तुण्डपर्यन्तम् ?
त्वदीये चैव मणिबन्धे क्वचित्स्यान्न्यूनता काचित् !

(56)

कदापि स्वार्थिनि लोकेऽन्विष मा नैतिकताम्
इयं कृता स्यात्कस्मैचिदपरलोकाय !

(57)

कदाप्यानयन्त्येतेऽग्निं, कदापि निपातयन्ति तडित् !
व्यथैवास्ति कथमेषां तृणान्येतानि शिष्यन्ते ?

(58)

जब जेबमें पैसे बजते हैं
 जब पेटमें रोटी होती है
  उस वक्त ये जर्रा हीरा है
   उस वक्त ये शबनम मोती है —जज्बी

(59)

'कुँअर' की आँख है, वह अश्कमें क्योंकर न भीगेगी ?
न जो भीगी कभी जलमें कमलकी पंखड़ी होगी ! —कुँअर बेचैन

(60)

एक मुसाफिरके सफर जैसी है सबकी दुनिया
कोई जल्दीसे कोई देरसे जाने वाला — निदा फाजली

(61)

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिलमें है
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है —बिस्मिल

(62)

चाहते हैं खूबरूओंको 'असद'
आपकी सूरत तो देखा चाहिये ! —गालिब

(63)

जो वक्त की आँधी से खबरदार नहीं है
कुछ और ही होंगे वो कलमकार नहीं है — कुँअर बेचैन

(64)

पूछते हैं लोग — "गालिब कौन है ?"
कोई बतलाओ कि हम बतलाये क्या ! —गालिब

(65)

ठिकाना पूछते हो क्या हमारा क्या ठिकाना है ?
मिले जो झोंपड़ी आगे निशा उसमें बिताना है ! — स्वामीसत्यभक्त

(58)

करयोर्धनमस्ति यदा प्रचुरम्
सुतनौ वसनान्युदरेऽप्यशनम्
सुमणिस्तु रजःकण एव तदा
सितमौक्तिकवज्जलबिन्दुकणः

(59)

कवेश्चक्षुषी चेते स्तः भवेतां कथं न क्लिन्ने ?
जले क्लिन्नङ् कदापि न यद् भवेच्छतपत्रपत्रन्तत् !

(60)

कस्यचिद् यात्रावद् विश्वमस्ति सर्वेभ्यः
कोऽपि गन्ता शीघ्रं कोऽपि च किञ्चित्स्थरत्वा !

(61)

कांक्षते चित्तं मदीयं मस्तकं छिन्नं भवेत्
साम्प्रतं पश्यामि भुजयोर्घातकस्य बलं कियत् !

(62)

कामयन्ते मानवा ये सुन्दरीः
ते कथं पश्यन्ति नो स्वीयाकृतीः !

(63)

कालप्रभञ्जनेन सन्ति नावगता ये
स्युः केचिदन्य एव न साहित्यकृतस्ते !

(64)

काव्यरसिकैः पृच्छ्यते – "गालिबः कः ?"
भाषतां कोऽपि स्वयं भाषे कथम् !

(65)

किमर्थं पृच्छ्यते भवता निवासस्थानमस्माकम् ?
मिलेदग्रे कुटी याऽस्मान् निशा तस्यां व्यतीतव्या !

(66)

न कुछ भी संग लाये थे, चलेगा संगमें भी क्या ?
पड़ा रह जायगा यों ही, न आना है, न जाना है — सत्यभक्त

(67)

पूछते क्या हो कि अहमक कौन है ? मैं क्या कहूँ ?
देख लो, वह खुद तुम्हारे सामने मौजूद है ! —अहमक फफूँदवी

(68)

कितने मुफलिस हो गये. कितने तवंगर हो गये ?
खाकमें जब मिल गये, दोनों बराबर हो गये !

(69)

क्या फकत इस्टेज के ही हैं जनाबे लिक्चरार ?
कहते सब कुछ हैं, मगर हजरतसे होता कुछ नहीं ! —अह. फफूँदवी

(70)

तेरे बन्दोंको क्या हो गया है ?
जिसको देखो खुदा हो गया है !

(71)

कैसे मंजर सामने आने लगे हैं ?
गाते-गाते लोग चिल्लाने लगे हैं ! —दुष्यन्तकुमार

(72)

कहींपे धूप की चादर बिछाके बैठ गये !
कहींपे शाम सिरहाने लगाके बैठ गये ! —दुष्यन्तकुमार

(73)

सबाने फिर दरे जिंदांपे आके दी दस्तक
सहर करीब है, दिलसे कहो, न घबराये !

(74)

जो हैं बदमाश उनसे तो नमस्ते दूरकी अच्छी
न उनकी दोस्ती अच्छी, न उनकी दुश्मनी अच्छी

(66)

किमस्माभिः सहानीतं चलिष्यति किं सहास्माभिः ?
चिरस्थं वस्तुजातमिदं न गमनञ्चास्य नागमनम् !

(67)

किमिति पृच्छन्त्यहमकः कः कथं किं कथयान्यहम् ?
मां स्वयं पश्यन्तु भवतां समक्षं समुपस्थितम् !

(68)

कियन्तो धनिका अभूवन् कियन्तो वा निर्धनाः ?
मृत्युतो मृदि यदाप्यमिलंस्तदा ते सर्वे समाः !

(69)

किं सभायामेव केवलमस्ति वाक्छूरो भवान् ?
भाषने सर्वं परार्थं नाचरति किन्तु स्वयम् !

(70)

कीदृशी नाथ ! भक्तेषु वृत्तिः ?
यं हि पश्येम जातः स नाथः !

(71)

कीदृशी भो ! दृश्यतेऽसौ दृश्यमाला ?
गायका अप्यकस्मात्क्रन्दन्ति यस्याम् !

(72)

कुतोऽपि कटमिव विस्तीर्य घर्ममुपविष्टाः !
कुत आदाय सायमुप धानवदुपविष्टाः !

(73)

खट्खटायितमनिलेन द्वारि कारायाः
समीप एवोषा मनश्चिन्तितं न भवेत् !

(74)

खला ये सन्ति तेभ्यः कृता प्रणतिर्दूरतस्त्वच्छा !
न तैः सह मित्रताप्यच्छा, न तैः सह शत्रुताप्यच्छा !

(75)

कहीं से ढूँढके ला दे हमें भी ऐ गुलेतर !
वो जिंदगी, जो गुजर जाय मुस्कुरानेमें

(76)

जो गूँज रहा था खुशियोंसे
उस कस्रपे कल रोया मैं बहुत
कोई मुतनफ्फिस था न वहाँ
बाहर भी फिरा अन्दर भी गया -अकबर इलाहाबादी

(77)

"उस्ताद ! अब बताइयें, कैसा मिजाज है ?" —दाग
"पैमाना भर गया है, छलकनेकी देर है !" —जौक

(78)

निकाला तो है पाँव बीबीने घरसे
मियाँ! हाथ मलते न रह जाइयेगा! —अहमक फफूँदवी

(79)

घरसे निकला हूं आँसुओं की तरह
वापसीका कोई सवाल नहीं ! —बशीर बद्र

(80)

दिल-से अनमोल नगीनेको छुपायें तो कहाँ ?
बारिशे संग यहाँ आठ पहर होती है ! —मीना कुमारी

(81)

हम लिये फिरते हैं आँखोंमें चमन ऐ बागवाँ !
जिस तरफ उट्ठी निगाहे शौक, गुलशन हो गया !

(82)

ख्वाबे गफलतसे तेरी जिस वक्त खुल जायेगी आँख
है जो कुछ आँखोंके आगे जल्वागर छुप जायगा —जफर

(75)

गवेषयित्वास्मभ्यमपि देहि भोः सुमनः !
तदेव जीवनं प्रयाति यत् स्मिते हसिते

(76)

गुञ्जन्नासीदुल्लासैर्यः
तस्मिन् प्रासादे रुदितोऽहम्
कोऽपि न तत्रासीद्धि प्राणी
बहिरन्तर्भागेऽप्यभ्राम्यम्

(77)

"गुरुदेव ! वदतु भवत्स्वास्थ्यमस्ति कीदृशम् ?"
"चषकोऽस्ति पूरितोऽधुना समुच्छलिष्यति

(78)

गृहात्ते बहिः स्वीयपादावधात् स्त्री
करौ घर्षयन्नत्र दृश्यस्व मा त्वम् !

(79)

गेहतश्चाश्रुवद् बहिर्यातः
भो इतः प्रतिगतेस्तु का वार्त्ता ?

(80)

गोपयानीह कुत्र बहुमूल्यश्चिद्रत्नम् ?
वर्षणं बोभवीति प्रस्तरस्य खण्डानाम् !

(81)

चरामो नयनेषु वयमादाय मालिक! वाटिकाम्
यत्र पतिता प्रिया दृष्टिस्तत्र दृष्टा वाटिका !

(82)

चक्षुरुन्मीलितं स्याद्यदि ते प्रमादस्वप्नतः
अस्ति यद् दृग्गोचरं सर्वं विलीनन्तद् भवेत्

(83)

उनकी आँखोंकी कसम खा लेते
वेद- कुर्आन गर नहीं होते ! —कैलाश सेंगर

(84)

दुनिया जिसे कहते हैं, जादूका खिलौना है !
मिल जाय तो मिट्टी है,खोजाय तो सोना है ! —फिराक गोरखपुरी

(85)

मुझमें रहते हैं करोड़ों लोग कैसे चुप रहूं ?
हर गजल अब सल्तनतके नाम एक बयान है ! - दुष्यन्त कुमार

(86)

'जफर' क्या पूछता है राह मुझसे उसके मिलने की ?
इरादा हो अगर तेरा तो हर जानिबसे रस्ता है ! —जफर

(87)

आगाह अपनी मौतसे कोई बशर नहीं
सामान सौ बरसका है पलकी खबर नहीं !

(88)

सब रंग रहें इस जीवन में
पर मैल नहीं लगने पाये
जीवनकी रंग-तरंगों में
विचरे मन, पर गुमराह न हो - स्वामी सत्यभक्त

(89)

जीवन आता था जिन्हें, खूब जिये, खूब जिये !
हम तो बस साँस ही लेने के गुनहगार रहे ! —कुँअर बेचैन

(90)

जिंदगी दूरसे चाँद थी, फूल थी !
पास आई तो हर पल सताती रही ! - निदा फाजली

(83)

चक्षुषोस्तस्याः कुर्मः शपथम्
धर्मशास्त्राणि नो भवेयुश्चेत् !

(84)

जगदिति यदुच्यते तत्क्रीडनकमतिविचित्रम् !
मृत्तुल्यमवाप्तं यल्लुप्तं स्यात्काञ्चनवत् !

(85)

जनौघो मयि वसत्यधुना मौनमवलम्बे कथम् ?
शासनं प्रति मामकं प्रत्येकपदमावाहनम् !

(86)

'जफर् !' साम्प्रतं मां पृच्छसि कथं तद्दर्शनोपायम् ?
भवेत्तावकः सङ्कल्पस्ततः प्रतिदिशातो मार्गः !

(87)

जानाति न स्वमृत्युमत्र कोऽपि मानवः
पलमप्यनिश्चितं शतवार्षिकपरिग्रहः !

(88)

जीवनवसनेऽस्मिन् वर्णदलम्
स्यान्मालिन्यं किन्तु न किञ्चित्
जीवनवाध्युञ्चतरङ्गस्थम्
स्यात् किन्तु न कुदि शागामि मनः

(89)

जीवनज्ञा ये तेऽतीव जीविता अवनौ !
केवलं श्वासप्रक्रियापराधरता वयम् !

(90)

जीवनं दूरतश्चन्द्रवत्पुष्पवत् !
सन्निधावागतं पीडयत्पीडयत् !

(91)

उसकी खुशबू थी रास्ता मेरा
जिससे होकर मैं फूल तक पहुँचा —कुँअर बेचैन

(92)

मजा तो जीनेका तब है कि जिंदगीको मैं
जिधर भी मोड़ना चाहूँ उधर ही मुड़ जाये —कुँअर बेचैन

(93)

भले हों अंगपर चिथड़े
लँगोटी भी न साजी हो
हमें तो शील-सेवासे
सदा जीवन सजाना है —स्वामी सत्यभक्त

(94)

ऐ दिल ! मुझे ऐसी जगह ले चल जहाँ कोई न हों
अपना - पराया मेह्रबाँ - नामेह्रबाँ कोई न हो

(95)

उसके दिलमें गुबार है, देखें
किस तरहसे सफाई होती है —जफर

(96)

दे मस्त फकीरी वह जिससे
शाहों की भी पर्वाह न हो
मैं भी न किसीका शाह बनूँ
मेरा भी कोई शाह न हो —स्वामी सत्यभक्त

(97)

ऐसे हर एक जख्मसे बच पाओ तो बचो
बाहरसे जो जुड़ा लगे, अन्दर कटा रहे ! —कुँअर बेचैन

(91)

तच्छुभो गन्ध एव मे मार्गः
अव्रजं येन पुष्पपर्यन्तम्

(92)

तदानुभूयते सुखन्तु जीवनस्य यदा
यथैव निनीषामि जीवनन्तथैव चलेत्

(93)

तनौ कौपीनमपि भिन्नम्
भवेयुर्जीर्णवस्त्राणि
सदा सच्छीलसेवाभिः
स्वजीवनमिदमलङ्कार्यम्

(94)

तस्मिन्स्थले नय मां मनः ! स्याद्यत्र कोऽपि न मानवः
अन्यः स्वकीयो दयालुर्निर्दयः कोऽपि न सम्भवेत्

(95)

तस्य चित्ते रजोऽस्ति, द्रक्ष्यामः
केन विधिनाऽधुना भवत्यमलम्

(96)

तादृक्संन्यासं यच्छतु मे
नाथानामपि चिन्ता न भवेत्
भूयासं कस्यापि न नाथः
कश्चिन्न ममापि भवेन्नाथः

(97)

तिष्ठन्तु तादृशा व्रणेन दूरतस्सदा
युक्तः प्रतीयते बहिरन्तः पृथगपि यः!

(98)

अक्लें दुरुस्त हो गईं महँगाईके सबब
सब बेवकूफ जंगमें चालाक हो गये ! —जरीफ जबलपुरी

(99)

वो लोग ही पिछड़े हैं तरक्कीके सफरमें
जो वक्तकी तलवारपे तलवार नहीं है ! —कुँअर बेचैन

(100)

उन पर्वतोंके पाँवमें मरुस्थलकी रेत है
जिन पर्वतोंकी आँखमें बादल नहीं 'कुँअर !' —कुँअर बेचैन

(101)

तू दिलमें तो आता है, समझमें नहीं आता
मालूम हुआ, बस तेरी पहिचान यही है ! —अकबर इलाहाबादी

(102)

तुम्हारे पाँवके नीचे कोई जमीन नहीं
कमाल यह है कि फिर भी तुम्हें यकीन नहीं —दुष्यन्तकुमार

(103)

हमने तुमको खूब देखा ऐ मिसाले आईना !
रूबरू कुछ और हो औ पीठ पीछे और हो !

(104)

मुझको कर देते हो जुदा मुझसे
जब भी मेरे करीब आते हो ! —कुँअर बेचैन

(105)

इन भुखमरोंकी चीखको फौरन दबाईये
पैसे दिये हैं, जोरसे नारे लगाइये ! — माणिक वर्मा

(106)

खुदा करता वहीं रहमत जहाँ इन्साफ पाता है
जहाँ इन्साफ की हस्ती, वहीं जन्नत बनाता है —स्वामी सत्यभक्त

(98)

तीव्रा धियोऽभवंस्तु महार्घत्वकारणात्
सर्वेऽप्यबुद्धयो युधि जाताः सुबुद्धयः !

(99)

ते यात्रिणोऽभवन्निह गन्तव्यवञ्चिताः
कालस्य कृपाणे तु कृपाणा न सन्ति ये !

(100)

तेषामचलानां पदेषु मरुभूसिकताः
येषामक्षिषु वारिदा न सन्ति भोः कुँअर् !

(101)

त्वञ्चेतस्यागच्छसि नागच्छसि बुद्धौ
सम्प्रति प्रतीयते खलु तव लक्षणमेतत् !

(102)

त्वदीयपादयोरधस्तु कापि भूर्नास्ति
तथापि चित्रमिदं न क्रियते विश्वासः

(103)

त्वामहं बहुधाप्यपश्यम्, प्रिये ! दर्पणसन्निभे !
यादृशी प्रत्यक्षतस्त्वं तादृशी न परोक्षतः !

(104)

त्वं वियुक्तं करोषि मां मत्तः
मत्समीपे यदा स्थितासि तदा !

(105)

दमयन्तु सत्वरं बुभुक्षुवृन्द-क्रन्दनम्
दत्तं धनं भवद्भ्यः क्रोशन्तु सवेगम् !

(106)

दयामीशः प्रवर्षति, यत्र पश्यति न्यायसाम्राज्यम्
प्रसीदत्याशु वा तस्मिन्स्थले निर्माति वैकुण्ठम्

(107)

हो के मायूस न यूँ शाम-से ढलते रहिये
जिंदगी भोर है, सूरज-से निकलते रहिये —कुँअर बेचैन

(108)

तस्कीन मुसीबतमें देनेको यूँ तो जमाना आता है
ऐसा भी कोई आता है जिसे बिगड़ीको बनाना आता है —अलम

(109)

दूर तक काँटे बिछे थे, जिंदगीकी राहमें
ढूँढ़ने वालोंने उनमें फिर भी कलियाँ ढूंढ़ लीं ! —कुँअर बेचैन

(110)

ये जमाना तो शिकारीकी तरह है ताकमें !
तुमने क्यों रक्खा है, हिरनी-सा हिया अब्बा मियाँ! —माणिक वर्मा

(111)

हमको मालूम है जन्नतकी हकीकत लेकिन
दिलके खुश रखनेको 'गालिब' ये खयाल अच्छा है ! —गालिब

(112)

हैं कुछ खराबियाँ मेरी तामीरमें जरूर
सौ मर्त्तबा बनाके मिटाया गया हूँ मैं !

(113)

न किसीकी आँखका नूर हूं
न किसीके दिलका करार हूं
जो किसीके काम न आ सके
मैं वो एक मुश्ते गुबार हूं ! —जफर

(114)

राह तो हमको बता दी खिज्रने
ऊँटका लेकिन किराया कौन दे ?

(107)

दुःखमनुभूय सदाऽस्तं न भवेत्सन्ध्यावत्
जीवनं प्रातरस्ति रविरिवोदयेन्नित्यम्

(108)

दुःखापन्नं मां सान्त्वयितुं सर्वेऽपिजना आगच्छन्ति
स तु दुर्लभ एव जनोऽर्हति मां विघ्नं हृत्वा सुखिनं कर्त्तुम्

(109)

दूरपर्यन्तमासीज्जीवनपथः कण्टकयुतः
तत्र चैवान्वेषिताः कलिकास्तथाप्यन्वेषकैः !

(110)

दृश्यते सम्प्रति युगोऽयं व्याधसदृशस्तत्परः
स्वीयहृदयं मृगीहृद्वत् किं भो भोः पितः !

(111)

देवलोकस्य तु जानामि यथार्थं सर्वम्
किन्तु नो मनोरञ्जनाय कल्पनैषाऽलम् !

(112)

दोषास्तु कतिचिदासन् खलु मम रचनायाम्
शतशो विनाश्य यतोऽहं कृतः पुनः पुनः !

(113)

द्युतिरस्मि नाक्षियुगस्य भोः
कस्यापि न शमश्चेतसः
कस्मैचिदपि हितकृन्न यत्
तन्मुष्टिमात्रमहं रजः !

(114)

धर्मगुरुणा नः सुमार्गो दर्शितः
किन्तु दद्यात् कः क्रमेलकभाटकम्?

(115)

अल्लाह न पूछेगा तुमसे
"किसकी औलाद कहाते हो ?"
पूछेगा तुमसे — "बदी और
नेकी क्या करके आते हो?" –स्वामी सत्यभक्त

(116)

न साढ़े तीन हाथों से अधिक कोई जगह पाता
पसारें हाथ कितने ही मगर क्या हाथ आना है! –स्वामी सत्यभक्त

(117)

नहीं कुछ हँसके सीखा है
नहीं कुछ रोके सीखा है
जो कुछ भी हमने सीखा है
किसी का होके सीखा है

(118)

करेंगी रूढियाँ तांडव अहंकारी सतायेंगे
मगर उनके प्रहारोंको हमें हँसकर उड़ाना है – स्वामी सत्यभक्त

(119)

जवानी ख्वाबकी-सी बात है दुनिया ए फानी में
मगर यह बात किसको याद रहती है जवानी में? —सीमाब

(120)

नहीं दिखते कहीं वे तीन बन्दर
यूं गाँधीजीके बन्दर हैं हजारों ! – जहीर कुरैशी

(121)

फरेबे जिंदगी जिसने न देखी हो, मुझे देखे
न सीनेमें है दिल अपना न मुँहमें है जुबां अपनी —चकबस्त

(115)

न कदापि प्रभुः प्रष्टा युष्मान्
"पुत्राः पुत्र्यः केषां यूयम् ?"
स तु प्रक्ष्यति भोः केवलमेतत्
"सुकृतं दुरितञ्च किमाचरितम् ?"

(116)

न कायाकारपरिमाणान्नरो भुङ्क्तेऽधिकं स्थानम्
भवेल्लोभानलः प्रबलस्तथापि स्यात्क्रियाँल्लाभः ?

(117)

न किञ्चिद्रुदित्वा ज्ञातम्
न किञ्चिद्धसित्वा ज्ञातम्
यदस्माभिः किमपि ज्ञातम्
तदपि सच्छ्रद्धया ज्ञातम्

(118)

न किं नतस्यन्ति नीचप्रथा न किन्तोत्स्यन्त्यहम्भावाः ?
परन्तु कृताः प्रहारास्तैर्मयाऽत्र विहस्य सोढव्याः !

(119)

न किं स्यात्स्वप्नवत्तारुण्यमस्मिन्नश्वरे विश्वे
तथाप्येतन्न कस्यापि स्मृतावायाति तारुण्ये !

(120)

न दृश्यन्ते त्रयस्ते क्वापि कपयः
यदेते गान्धिनः कपयः सहस्रम् !

(121)

न दृष्टो येन कश्चिज्जीवनाभासः स मां पश्येत्
स्वकीयं नास्त्युरसि चित्तं स्वकीया वा मुखे वाणी

(122)

नहीं कुछ इसकी पुरसिश उल्फते अल्लाह कितनी है
सभी यह पूछते हैं, 'आपकी तनख्वाह कितनी है?'-अक.इलाहाबादी

(123)

ना खुदा ही मिला ना विसाले सनम
ना इधरके रहे ना उधरके रहे !

(124)

कोई लहजा जेरे फलक तू
जाग ले ख्वाबे गफलतसे
फिर तो जेरे जमीं ऐ गाफिल !
आखिर तुझको सोना है —जफर

(125)

कटोरा ही नहीं है हाथमें बस इतना अन्तर हैं
मगर बैठे जहाँ हो तुम खड़े हम भी वहीं बाबा ! — कुँअर बेचैन

(126)

न मुँह छुपाके जिओ और न सर झुकाके जिओ
गमोंका दौर भी आये तो मुस्कुराके जिओ

(127)

झुकानेको हर दर पे सरको झुका दूँ
नुमाइशका सज्दा इबादत नहीं है —जरीफ जबलपुरी

(128)

न इफ कीजिये और न बट कीजिये
जो साहब कहें उसको झट कीजिये —अकबर इलाहाबादी

(129)

हजारों लोग हैं हर रास्ते पर
मगर हर शख्स तन्हा जा रहा है !

(122)

न पृच्छा दृश्यते कस्मिंश्चिदपि मद्भक्तिमवगन्तुम्
"त्वदीया मासिकी भृतिरस्ति कियती?" पृच्छ्यते सर्वैः

(123)

न प्रभोर्दर्शनं न प्रियासङ्गमः
न त्वितस्त्या वयं न तु ततस्त्या वयम् !

(124)

नभस्तले क्षणमात्रं जागृहि
स्वीयप्रमाद - निद्रातः
ततः प्रमादिन्नन्तिमकाले
भूतलशयनङ्कर्त्तव्यम्

(125)

न भिक्षापात्रमिह पाणौ भवत्यन्तरञ्चैतावत्
भवान् यत्रास्ति वयमप्यास्थितास्तत्रैव भो भिक्षो !

(126)

न मस्तकं नत्वा नैव वा पिधाय मुखम्
विपद्गणोऽपि पतेत्त्वं विहस्य जीव सदा

(127)

नमानि प्रणन्तुं शिरः सर्वस्थाने
न तद् वन्दनं कृत्रिमं वन्दनं यत्

(128)

न यद्युच्यतां नो परन्तूच्यताम्
प्रभूक्तं तु यत्सत्वरं तत्क्रियात्

(129)

नराः शतशो न किं प्रत्येकमार्गे ?
करोति व्यक्तिरेकाकी प्रयाणम् !

(130)

धन-दौलतकी पर्वाह न हो
जो पाऊँ उसमें मस्त रहूँ
तेरी ही आशा हो मुझको
मनमें चिन्ताका दाह न हो —स्वामी सत्यभक्त

(131)

कैसे आकाशमें सूराख नहीं हो सकता ?
एक पत्थर तो तबीयतसे उछालो यारो ! —दुष्यन्तकुमार

(132)

कोई चाहत है ना जरूरत है
मौत क्या इतनी खूबसूरत है ! —मीना कुमारी

(133)

लेनेसे तख्तो ताज मिलता है
माँगेसे भीख भी नहीं मिलती ! —फिराक गोरखपुरी

(134)

हम अकेले ही चले थे जानिबे मंजिल, मगर
लोग आते ही गये और कारवाँ बनता गया !

(135)

काँटोंसे बचके जब भी निकलने की चाह की
फूलोंकी पंखड़ीपे मेरा पाँव पड़ गया ! —कुँअर वेचैन

(136)

अब नई तहजीबके पेशे नजर हम
आदमीको भून कर खाने लगे हैं ! —दुष्यन्तकुमार

(137)

आँखसे जो भी गिरा वह मिल गया है धूलमें
जानता था अश्क फिर भी आँखसे गिरता रहा ! —कुँअर वेचैन

(130)

न स्यान्मयि धनवृद्धेश्चिन्ता
यो लाभः स्यात्तस्मिंस्तुष्टः
आशा तु सदा भवदीया स्या–
च्चेतसि चिन्तादाहो न भवेत्

(131)

नात्र छिद्रं कथमेकमपि भवेदाकाशे ?
चेतसैकं प्रस्तरमुत्क्षिपन्तु हे सुहृदः !

(132)

नाप्यपेक्षास्ति कापि नाकाङ्क्षा
अस्ति भोः कियान् शोभनो मृत्युः !

(133)

निजकरैर्लभ्यतेऽधिकारपदम्
किन्तु याच्ञया नैव भिक्षापि !

(134)

निश्चयं कृत्वाऽचलं गन्तव्यदिश्येकाक्यहम्
आगता लोकास्तु क्रमशस्तेन समुदायोऽभवत् !

(135)

निष्कण्टका तु जिगमिषा मया कृता यदा
पुष्पस्य दलेऽपतत्तदा मदीयः पदः

(136)

नूतनायाः सभ्यतायाः सन्निधाने
अद्य मानवमेव दग्ध्वाभक्षयामः

(137)

नेत्रयोर्यदधः पततति तत्खलु भवति भो धूलिसात्
इति तु जानन्नपि नयनयोर्नित्यमश्रुकणोऽपतत्!

(138)

समझमें कुछ नहीं आता
पढ़े जाऊँ तो क्या हासिल ?
नमाजोंका है कुछ मतलब
तो परदेशी जबाँ क्यूँ हो ? —यगाना

(139)

एहसान उठानेसे कड़ी धूप ही बेहतर
मिलनेको बहुत साया ए दीवार मिले हैं —उस्मान आरिफ

(140)

आशना हों कान क्या इन्सानकी फरियादसे ?
शेखको फुरसत नहीं मिलती खुदाकी यादसे ! —चकवस्त

(141)

फूलोंकी राहपे तो कदम बादमें रखें
पहले किसीके पाँवके काँटे निकालिये ! — कुँअर बेचैन

(142)

गौरसे देखिये तो दीखेगी
आँसुओं में खड़ी है खामोशी —कुँअर बेचैन

(143)

तामीरे कायनातको गहरी नजरसे देख
वह जर्रा कौन-सा है यहाँ जो अहम नहीं ?

(144)

ऐ जौक ! किसे चश्मे हिकारतसे देखिये ?
सब हमसे जियादा हैं, कोई हमसे कम नहीं! —जौक

(145)

हम परिन्दोंकी मानिन्द उड़ने लगे
चल न पाये मगर आदमीकी तरह !

(138)

पदार्थज्ञानमपि न स्यात्
तदा पाठेन को लाभः ?
नमाजा अर्थवत्यश्चेत्
कथं भाषा विदेशीया ?

(139)

परकीयकृपाभाराच्छ्रेयानतिघर्मः
लब्धुं भित्तिच्छायास्त्वलभामहि नाना

(140)

परिचितौ कर्णौ कथं स्यातां नु मानवक्रन्दनैः ?
कश्चिदवकाशं न लभते धार्मिकः प्रभुपूजनात् !

(141)

पश्चात्तु पथि पदं निधेहि पुष्पनिर्मिते
कस्यापि पादकण्टकानि पूर्वमुद्धरेः !

(142)

पश्यतु भवान् हि सावधानञ्चेत्
अश्रुवर्षासु दृश्यते मौनम्

(143)

पश्यन्तु विश्वरचनां गम्भीरया दृशा
धूलीकणः स को न भवेदत्र यो महान् ?

(144)

पश्येम जौक ! हीनदृशा जगत्यत्र कम् ?
सर्वेऽपि वरा नास्ति कोऽपि हीनतरोऽस्मत् !

(145)

पक्षिवच्चोत्पतन्तो नभोमण्डले
आचरामो नृवद् भो न भूमण्डले !

(146)

बाँधकर घुँघरुओंको पाँवोंमें
नाच कर गीत गा गई रोटी ! — कृष्णमित्र

(147)

कुदरतको नापसंद है सख्ती जबानमें
पैदा हुई न इसलिए हड्डी जबानमें

(148)

पुरानी रोशनीमें औ नईमें फर्क इतना है
उसे कश्ती नहीं मिलती, इसे साहिल नहीं मिलता! -अ इलाहाबादी

(149)

पड़ा कर्त्तव्यका पथ है
भला विश्राम क्या होगा ?
न सो कर उम्र खोना है
हमें चलकर दिखाना है ! —स्वामी सत्यभक्त

(150)

हमने पत्थरको भी मूरत समझके पूज लिया
लोग मूरतमें पत्थर तलाश करते रहे ! —कुँअर बेचैन

(151)

मुहब्बत चाहिये बाहम, हमें भी हो तुम्हें भी हो
खुशी हो इसमें या हो गम, हमें भी हो तुम्हें भी हो —जफर

(152)

जो हमारी नजरको पहिचाने
कोई ऐसा नजर नहीं आता ! —कुँअर बेचैन

(153)

दिखा कर इक झलक आँखोंसे वो ओझल हुए और हम
अँधेरे में उजालेकी किरन ढूँढ़ा किये बरसों ! —सुमन कुशवाह

(146)

पादयोरत्र नूपुरे बद्ध्वा
रोटिकाऽगायदेव नृत्यन्ती !

(147)

पारुष्यमत्र वचसि प्रकृत्यै न रोचते
नोत्पादितास्थिका रसना क्वापि दृश्यते

(148)

पुरातनसभ्यताया नूतनाया अन्तरञ्चं तत्
तया न प्राप्यते नौकाऽनया न प्राप्यते तटकम् !

(149)

पुरः कर्त्तव्यमार्गोऽयम्
कथं शक्याऽत्र विश्रान्तिः ?
न सुप्त्वाऽऽयुर्विनष्टव्यस्
निरन्तरमेव गन्तव्यम् !

(150)

पूजयामः प्रतिमां मत्त्रा पाषाणमपि
किन्तु तस्यामपि प्रस्तरमन्वेषयति जनः !

(151)

पृथिव्यां प्रेमसम्बन्धस्त्वयि स्यान्मय्यपि तथा स्यात्
विषादोऽस्मिस्तु हर्षो वा त्वयि स्यान्मय्यपि तथा स्यात्

(152)

प्रत्यभिज्ञानदृष्टिसम्पन्नः
दृश्यते कोऽपि मानवो नैव !

(153)

प्रदर्श्य च्छविं स्वीयां क्षणं क्वापि मृगेक्षणा लुप्ता
तमसि घोरे दिवाकरकिरणमिव चान्वेष्टुकामाः स्मः !

(154)

खिलौनोंको खुदा माने हुए हैं
सयाने लोग दीवाने हुए हैं ! —शिव ओम अम्बर

(155)

रोज कहता है कि ले चल कूच-ए-कातिल मुझे
जूतियाँ खिलवायगा उल्लूका पट्ठा दिल मुझे !

(156)

अजल भी जिनको सुनकर झूमती है
वो नग्मे जिंदगीके गा रहा हूं ! —फिराक गोरखपुरी

(157)

पत्थरोंकी अनवरत वर्षा बनेगी हर दिशा
हक-बयानीको जरा फितरत बनाकर देखिये ! —शिव ओम अम्वर

(158)

उसने फेंके मुझपे पत्थर और मैं जलकी तरह
और ऊपर, और ऊपर, और ऊपर उठ गया ! —कुँअर वेचैन

(159)

सुबह-सवेरे जिन हाथोंको मेहनतके घर भेजा था
वही शामको लेकर लौटे खाली झोली बाबूजी ! —कुँअर वेचैन

(160)

जिनको वैसाखियाँ मिलीं, वे सब
अपने पाँवोंपे क्यों खड़े होते ! —कुँअर बेचैन

(161)

इश्क करनेके लिए काफी कलेजा ही नहीं
आशिकों की चाँद भी मजबूत होनी चाहिये! —गोपालप्रसाद व्यास

(162)

जब मुझें मेरी खुशी ही दे न पाई जिंदगी !
मैंने तब उसकी खुशीमें अपनी खुशियाँ ढूँढ़ लीं ! —कुँअर बेचैन

(154)

प्रभुं ये मन्वते क्रीडनं दृष्ट्वा
सुविज्ञास्तेऽप्यहो जाताः प्रमत्ताः !

(155)

प्रमदया परकीयया मां प्रेरयति रन्तुं मनः
पादुकानां प्रहारैर्वपुषश्चिकीर्षति दुर्दशाम्

(156)

प्रसन्ना भवति मृत्युर्यद्धि श्रुत्वा
सदा गायामि जीवनगीतकन्तत् !

(157)

प्रस्तराणां भविष्यति वर्षा तु प्रत्येका दिशा
सत्यकथनस्वभावं निर्माय पश्यतु भोः स्वयम्

(158)

प्रस्तरा मयि यथा क्षिप्तास्तथाहं पानीयवत्
उत्थितः क्रमशो दिशायामुपर्युपरि शनैः शनैः

(159)

प्रातः समुत्थाय यौ हस्तौ श्रमालयेऽहं प्रेषितवान्
रिक्तभस्त्रिकासहितौ सायं तावायातौ बाबूजी !

(160)

प्राप्यते यैः पराश्रयः पूर्णः
स्थीयते तैः कथं स्वपादेषु !

(161)

प्रेम कर्त्तुं न पर्याप्तञ्जगति हृदयं केवलम्
प्रेमिणां मस्तकमपि स्यात्सुदृढमित्यावश्यकम् ! त्या

(162)

प्रेयसी हर्षं मदीयं यदा मह्यं नोऽददात्
तदा तस्या एव हर्षे मया हर्षोऽन्वेषितः !

(163)

चाँद सूरज सितारे सभी कैद हैं
चंद महलोंमें गिरवी गगन है यहाँ ! —हृ. नायडू

(164)

लोग मरते रहें तो अच्छा है
अपनी लकड़ीकी टाल है साहब ! —प्रदीप चौबे

(165)

ऐ आसमाँ ! खुदाका हमको नहीं है खौफ
डरते हैं तो बस इस जमींके आदमीसे हम

(166)

खत्म जो उम्र भर नहीं होगा
ऐ कुँअर ! ऐसा इम्तिहाँ हूं मैं —कुँअर बेचैन

(167)

तुम्हारी ही तरह हम भी रहे हैं आज तक प्यासे
न जाने दूधकी नदियाँ किधर होकर बहीं बाबा ! —कुँअर बेचैन

(168)

आप क्यों दीवारके बदले यहाँ सीढी बने ?
रौंदनेका सबको मौका क्यों दिया अब्बा मियाँ ! —माणिक वर्मा

(169)

जिसे तुम घर समझते हो, वही तुमको मुबारिक हो
हमारा क्या ? हमें तो सब जगतको घर बनाना है —स्वामी सत्यभक्त

(170)

आप तो सबके बने कितने बने हैं आपके ?
मैंने अपनी उँगलियोंपर गिन लिये अब्बा मियाँ ! —माणिक वर्मा

(171)

जिस जगह भी याद आ जाये खुदा
वो जगह किब्ला है, तीर्थस्थान है —स्वामी सत्यभक्त

(163)

वन्दिनः सन्ति शीतांशु-रवि-तारकाः
भव्यभवनेषु गुप्तं नभः केषुचित् !

(164)

भद्रमेतद्धि म्रियन्ते लोकाः
मामका विपणिरस्ति काष्ठानाम् !

(165)

भयमस्ति भगवतोऽस्मान् किञ्चिन्न भो नभः !
अस्या भुवस्तु नरादेव बिभीमो वयम्

(166)

भवत्याजीवनं समाप्ता नो
ईदृशी हे कुँअर् ! परीक्षाऽहम्

(167)

भवन्तमिवाद्यपर्यन्तम्, पिपासा बाधते स्मास्मान्
न जाने दुग्धनद्यः कुतोऽत्र प्रावहन् भो भिक्षो!

(168)

भवान् भित्तिस्थलेऽभूत्सोपानवर्तिक भूतले ?
पादघातावकाशो दत्तः कथं भो भोः पितः !

(169)

भवान् यन्मन्यते गेहं तदेवाभातु भावत्कम् !
किमस्माकं ? यतोऽस्माभिस्तु विश्वं गेहमिव दृष्टम्!

(170)

भवांस्त्वभवत्सार्वजनिकः कियन्तो भवतोऽभवन् ?
अङ्गुलीष्वेतन्मया गणनं कृतं भो भोः पितः !

(171)

भवेदल्लाहस्मृतिर्यस्मिस्थले
तदेवास्माकं प्रियं तीर्थस्थलम्

(172)

जिनको चाँदी चुगाई जाती है
उन परिन्दोंके पर नहीं होते ! —कैलाश सेंगर

(173)

लोग हमसे कह रहें हैं – "आग की बातें करो
आँसुओंके गीत तो हमने तुम्हारे सुन लिये !" —कुँअर बेचैन

(174)

काम आते हैं न आ सकते हैं बेजाँ अल्फाज
तर्जुमाँ दर्दकी खामोश नजर होती है ! —मीना कुमारी

(175)

वक्त आनेपर बता देंगे तुझे ओ आसमाँ !
हम अभीसे क्या बतायें क्या हमारे दिल में है ! —बिस्मिल

(176)

खुश रहो, हर खुशी है तुम्हारे लिए
छोड़ दो आँसुओंको हमारे लिए

(177)

दोस्तों ! दूर हमको कहीं ले चलो
हर तरफ बस जलन ही जलन है यहाँ ! —ह. नायडू

(178)

किसीकी जुस्तजूमें इस कदर भटका किये बरसों
कि अपने आपसे मिलनेको हम तड़फा किये बरसों -सुमन कुशवाह

(179)

मक्का गया, मदीने गया, कर्बला गया
जैसा गया था, वैसा ही चल-फिरके आ गया !

(180)

इधर तो सरपे सवालोंका बोझ रक्खा है
उधरसे हुक्म हुआ है — "जबान मत खोलो !"

(172)

भक्ष्यते काञ्चनं तु यैर्विहगैः
नास्ति तेषां हि पतत्त्रं किञ्चित् !

(173)

भाषतेऽस्मान् जनोऽयम्– "कुर्वन्तु वार्त्तांवह्निवत्
अश्रुमग्नान्यत्रभवतां गीतकानि श्रुतान्यलम् !"

(174)

भूयते नोपयोगिभिर्निष्प्राणैः शब्दैः
वेदनाया वक्त्री दृष्टिरेव निःशब्दा

(175)

भो नभस्त्वां यथाकालं दर्शयिष्यामि ध्रुवम्
किं वदान्यधुनैव तदहं यन्मदीये मानसे ?

(176)

भो भवन्तो भवन्तु प्रसन्नाः सदा
अश्रुवृन्दं परित्यज्य खलु मत्कृते

(177)

भो वयस्या ! नयन्तु प्रकृष्टं क्वचित्
अत्र सर्वत्र दृष्टोमया मत्सरः

(178)

भ्रमन्तः कस्यचित्तु गवेषणे नूनं तथा लीनाः
यथात्मानन्दमुपभोक्तुं चिरं वयमाकुला जाताः

(179)

मक्कां गतो मदीनामपि कर्बलां गतः
आसं यथा तथैव परिभ्रम्य चागतः !

(180)

मदीयमस्तके त्वितोऽस्ति प्रश्नसम्भारः
अहं ततो भजस्व मौनमित्थमादिष्टः

(181)

मेरा तजरुबा है कि इस जिन्दगी में
परेशानियाँ ही परेशानियाँ हैं ! —हफीज

(182)

तौबा करके आज फिर पी ली 'रियाज'
क्या किया ? कम्बख्त ! तूने क्या किया ? —रियाज

(183)

जो मनको साथ-साथ लिये घूम रहा है
उलझनको साथ-साथ लिये घूम रहा है —कुँअर बेचैन

(184)

आदमी बनकर जिया यह क्या किया अब्बा मियाँ ?
उम्रभर इतना जहर कैसे पिया अब्बा मियाँ ? —माणिक वर्मा

(185)

जहाँ इन्सानकी औकातसे दौलत बड़ी होगी
महल तनकर खड़े होंगे, झुकी हर झोंपड़ी होगी —कुँअर बेचैन

(186)

जले जो रेतसे तलुए तो हमने यह देखा
बहुत-से लोग वहीं छटपटाके बैठ गये ! —दुष्यन्तकुमार

(187)

यह मत पूछो, हमको क्या-क्या दुनियाने त्यौहार दिये ?
मिली हमें अन्धी दीवाली, गूँगी होली बाबूजी ! —कुँअर बेचैन

(188)

जाने क्यूँ ये पहुँच न पाईं इन्सानोंके कानों तक !
आहें यूँ तो पहुँच रही है अब भी चाँद-सितारों तक— कुँअर बेचैन

(189)

आदमी एक जीवित हवन है यहाँ
सत्य मुर्दा पड़ा बेकफन है यहाँ —ह. नायडू

(181)

मदीयानुभूतिः सदा जीवनं नः
विपद्भिः प्रपूर्णं विपद्भिः प्रपूर्णम्

(182)

मद्यमद्य पुनर्विहायाङ्गीकृतम्
किं कृतं? दुर्भाग्यशालिन्! किं कृतम् ?

(183)

मनसा साकं योऽत्र परिभ्रमति भूतले
दुर्विधया सह सोऽत्र परिभ्रमति भूतले

(184)

मनुजतां स्वीकार्य जीवन् किं कृतं भो भोः पितः ?
इयद्विषमाजीवनम्, पीतं कथं भो भोः पितः ?

(185)

मनुष्याद् यत्र सम्पत्तेः प्रतिष्ठाधिकतरी भूयात्
नतं प्रत्येकमुटजं तत्र स्यात्सौधास्तु तिष्ठेयुः

(186)

मया पुलिनतप्ते पादतले विलोकितम्
प्रभूतभीतजनास्तत्र मौनमुपविष्टाः !

(187)

मह्यं कानि कानि पर्वाणि जगत्यददादिति पृच्छतु मा
मुकहोलिका प्राप्ता चान्धा दीपमालिका बाबूजी !

(188)

मानवकर्णयुगेषु न जाने कथं न यातः करुणरवः ?
साम्प्रतमपि यो दरीदृश्यते गच्छन्नाकाशं यावत् !

(189)

मानवस्त्वेकज्वालामुखी जीवितः
सत्यवादी यथा वस्त्रहीनः शवः

(190)

शक्ले इन्सांमें खुदा था, मुझे मालूम न था !
चांद बादल में छिपा था, मुझे मालूम न था !

(191)

आदमी तो उसे न खा पाया
आदमी को ही खा गई रोटी —कृष्णमित्र

(192)

देखकर आदमी के चेहरेको
चुटकुले तक उदास हैं यारों ! —प्रदीप चौवे

(193)

बागवाँने आग दी जब आशियानेको मेरे
जिनपे तकिया था, वही पत्ते हवा देने लगे!

(194)

एक मालाको लिये बढ़ रही थी मजबूरी
लोग उसमें भी स्वयंवर तलाश करते रहे ! — कुँअर बेचैन

(195)

हो फुरसत तो हमारे दुःख बाँटे
जरा देखो, खुदा क्या कर रहा है ? —राहत इन्दौरी

(196)

गूँगे निकल पड़े हैं जुबाँ की तलाश में !
सरकारके खिलाफ ये साजिश तो देखिये ? — दुष्यन्तकुमार

(197)

हँसके दुनियामें मरा कोई, कोई रोके मरा
जिंदगी पाई मगर उसने जो कुछ होके मरा —अकबर इलाहाबादी

(198)

कमसे कम मौतसे ऐसी मुझे उमीद नहीं
जिंदगी! तू ने तो धोखेपे दिया है धोखा!

(190)

मानवाकृतावीश आसमवागच्छं नो !
वारिदे गुप्तो विधुरभूदवागच्छं नो !

(191)

मानवाः खादितास्तथैवात्र
खादिता मानवैर्न सा रोटी

(192)

मानवीयां मुखाकृतिं दृष्ट्वा
हास्यवार्त्ताऽप्यभूदुदासीना !

(193)

मालिकश्चेदधाक्षीन्नीडं मदीयं वह्निना
येषु पत्रेषूपधानं तान्यभूवन् व्यजनवत् !

(194)

माल्यमादाय पुरोऽसरत्कापि परवशता
किन्तु तत्रापि स्वयंवरो गवेष्यते जनैः !

(195)

मिलेदवसरश्चेद् दुःखानि छिन्द्यात्
करोति प्रभुः किं पश्यन्तु किञ्चित्

(196)

मूकास्तु प्राचलन्निह जिह्वा गवेषणे !
कृतिमेतां पश्यन्तु सर्वकारविरुद्धाम् !

(197)

मृतो विहसन् कोऽपि, कोऽपि क्रन्दनं कुर्वन्मृतः
तेन प्राप्तं जीवनं यः कश्चिदुपकुर्वन् मृतः

(198)

मृत्युतः कदाचिदपि नैतत् प्रत्याशासे
जीवन ! त्वया कृतं मयि तु पुनः पुनश्छलम्

(199)

बिदाई स्वार्थको दी फिर
हमारा क्या तुम्हारा क्या ?
जमीं औ आसमाँ सारा
सदन हमको बनाना है ! —स्वामी सत्यभक्त

(200)

खुदमें महसूस हो रहा है जो
खुदसे बाहर तलाश है उसकी —मीना कुमारी

(201)

करो हमको न शर्मिन्दा, बढ़ो आगे कहीं बाबा !
हमारे पास आँसूके सिवा कुछ भीं नहीं बाबा ! —कुँअर बेचैन

(202)

अगर अपना कहा तुम आप समझे भी तो क्या समझे ?
मजा कहनेका तब है, एक कहे, दूसरा समझे !

(203)

नजर ऊँची कर दी दुआ बन गई
नजर नीची कर दी हया बन गई
नजर तिरछी कर दी अदा बन गई
नजर फेर ली तो कजा बन गई

(204)

मुहब्बतमें तेरी गिरफ्तार हो कर
हर इक रंजो गमसे रिहा हो गये हम

(205)

मैं जिसके हाथमें एक फूल देके आया था
उसीके हाथका पत्थर मेरी तलाशमें है ! —कृष्णबिहारी नूर

(206)

जिसे देखिये, मुझसे बढ़ कर है 'अहमक'
यहाँ हम किसे अपनेसे कम बतायें ? —अहमक फफूँदवी

(199)

यतः स्वार्थेन मुक्ताः, किम्
ततो युष्माकमस्माकम् ?
सनक्षत्रं जगत्सर्वम्
स्वकीयं गेहमवगम्यम् !

(200)

यत्तु चित्तेऽनुभूयते सर्वैः
तद् गवेष्यते बहिरहो चित्रम्!

(201)

यथेच्छमितो व्रजत्वग्रे, करोतु न लज्जितानस्मान्
समीपे नोऽश्रुभिर्व्यतिरिक्तमस्ति न किमपि भो भिक्षो!

(202)

यदा तु स्वीयकथनं स्वयं बुद्धं तदा किं बुद्धम्?
भवति मोदानुभूतिर्यदैकेनोक्तं परैर्बुद्धम् !

(203)

यदा दृष्टिरुच्चैस्तदाशीरभूत्
यदा सास्ति नीचैस्तु लज्जा तदा
यदासीत्सुतिर्यक् कटाक्षोऽभवत्
परावर्त्तिता मृत्युरेवाभवत्

(204)

यदाऽहं सुवद्धस्तव प्रेमरज्ज्वा
अभूवं सकलदुःखशोकैर्विमुक्तः

(205)

यदीयपाणौ दत्त्वा प्रसूनमागच्छम्
मदङ्गमन्विष्यति तत्करस्थपाषाणः !

(206)

यमेवावलोकेऽस्ति मत्तोऽधिकः सः
वयस्या ! वदेयं नरं कं हि न्यूनम्!

(207)

माना कि तेरी दीदके काबिल नहीं हूँ मैं
तू मेरा शौक देख, मेरा इन्तजार देख !

(208)

इन्साँकी जिन्दगी तो है यक दो नफ़स तलक़
सामाँ करे है जीनेका लाखों बरस तलक —जफ़र

(209)

है रात तो इसके बाद सहर
अनवार भी लेकर आयेगी
है सुबह तो शब तारोंके चमकते
हार भी लेकर आयेगी

(210)

जिसको देखो, वही है चुप चुप-सा
मानो हर शख्स इम्तिहानमें है —अमीर कजलबाश

(211)

माँगी है न माँगेगे कभी भीख करम की
हम अपनी वफाओंका सिला माँग रहे हैं !

(212)

जिनको सूरज नहीं जगा पाया
उनको आ कर जगा गई रोटी —कृष्णमित्र

(213)

जिंदगी अपनी जब इस रंगसे गुजरी 'गालिब'
हम भी क्या याद करेंगे कि खुदा रखते थे ! —गालिब

(214)

उम्रभर हल हुआ नहीं हमसे
जिंदगी वह सवाल है साहब ! —प्रदीप चौबे

(207)

यद्यपि त्वदीयदर्शनस्य नात्र पात्रता
त्वं पश्य मद्रुचिश्च प्रतीक्षाञ्च मामकीम्!

(208)

यद्यपि मनुष्यजीवनमस्ति खलु नश्वरम्
क्रियते परिग्रहस्तथापि लक्षवार्षिकः

(209)

यद्यस्ति तमिस्राऽस्याः पश्चात्
द्युत्या सममागच्छत्यूषा
यद्यस्ति दिनं तर्ह्यागन्ता
यामिनी सतारकदलहारा

(210)

यन्तु पश्याम दृश्यते सोऽवाक्
जनः प्रत्येक इव परीक्षायाम्

(211)

याच्ञा तु कृपाया न कृता नापि करिष्ये
याचे निजकर्त्तव्यफलं केवलन्त्वहम् !

(212)

यानबौत्सीत्स्वयं न मार्त्तण्डः
तानबौत्सीत्समागता रोटी !

(213)

यापितं जीवनमस्यां स्थितौ यदा 'गालिब्'
सेश्वरः कदाचिदासमिति च स्मरिष्यामि!

(214)

या समाहिता न यावज्जीवम्
अस्ति सा जीवनं समस्येका !

(215)

जमानेमें जो गम मिले दोस्तोंसे
उन्हींको मैं ऐ मेह्रबाँ ! बेचता हूं —फिराक गोरखपुरी

(216)

तूफाने दर्दो गममें न गुल हो सकी मगर
शम - ए - हयात साँसके झोंकेसे बुझ गई !

(217)

जिस आदमीने आदमीको आदमी कहा
उस आदमीको आदमीसे फिर मिलाइये —माणिक वर्मा

(218)

रात भर का है मेहमाँ अँधेरा !
क़िसके रोके रुका है सवेरा ? —साहिर लुधियानवी

(219)

अब राम कहाँ ? किसलिए हर घाटपे तुलसी
चन्दनको साथ - साथ लिये घूम रहा है ? —कुँअर बेचैन

(220)

न दुश्मन अब रहा कोई
हमारे दोस्त हैं सब ही
सभीके प्रेममय मनपर
हमें कुटिया बनाना है —स्वामी सत्यभक्त

(221)

इश्कने 'गालिब' निकम्मा कर दिया
वर्ना हम भी आदमी थे कामके ! —गालिब

(222)

लंकामें रावणकी शंका घर में रामका डर
सीता बनकर नारी पाये चैन न जीवनभर —सहबा अख्तर

(215)

युगे ये विषादाः सुहृद्भ्योऽमिलन्माम्
करोम्येव तेषां सदा विक्रयं भोः !

(216)

यो दुःखशोकयोरपि प्रभञ्जने स्थिरः
श्वासेन विनष्टः स जीवनस्य प्रदीपः!

(217)

यो मानवोऽब्रवीच्च मानवेति मानवम्
तं मानवन्तु मानवेन मेलयतु पुनः

(218)

रात्रिपर्यन्तमेवान्धकारः !
कोऽत्र शक्नोति रोद्धुं प्रभातम् ?

(219)

रामोऽधुना क्व ? किं घट्टे घट्टे तुलसी
आदाय चन्दनन्तु परिभ्रमति भूतले ?

(220)

रिपुः शिष्टो न कोऽप्यधुना
वयस्याः सन्ति सर्वे मे
समेषां स्नेहमयचित्ते
कुटी तु मया हि निर्मेया

(221)

रूपमोहकृतः प्रमादी 'गालिबः'
अन्यथाऽऽ सं मानवोऽहं कर्मठः !

(222)

लङ्कायां रावणशङ्का स्याद् गृहे तु रामभयम्
सीता भूत्वा नार्या प्राप्तं किञ्चिन्नात्र सुखम्

(223)

बेबसीमें लाजने घुँघरू कसे
किन्तु लोगोंने पलट कर वाह की —अनिल उदित

(224)

कहे एक जब सुन ले इन्सान दो
कि हकने जुबाँ एक दी, कान दो —जौक

(225)

खुदाके बन्दे तो हैं हजारों
वनोंमें फिरते हैं मारे-मारे
मैं उनका बन्दा बनूँगा जिनको
खुदाके बन्दोंसे प्यार होगा — इकबाल

(226)

इससे बढ़ कर दोस्त कोई दूसरा होता नहीं
सब जुदा हो जायँ लेकिन गम जुदा होता नहीं — जिगर

(227)

कहो, हम कौन हैं ? क्यों राहमें लाचार बैठे हैं !
मुसाफिर हैं, सफर करनेकी हिम्मत हार बैठे हैं !

(228)

अपने हालातका एहसास नहीं है मुझको
मैंने औरोंसे सुना है कि परेशाँ हूं मैं !

(229)

सच बोलनेके एक गुनहगार हम भी हैं
गर ये कुसूर है तो सजावार हम भी हैं

(230)

रेतमें जल कहाँसे लाओगे ?
मौतका हल कहाँसे लाओगे ? —जगदीश श्रीवास्तव

(223)

लज्जया निजविवशतायां नर्त्तितम्
किन्तु निर्लज्जैर्जनैर्हासः कृतः

(224)

वदेच्चैकमेव श्रुते युग्मके
मुखं दत्तमेकं हि कर्णद्वयम्

(225)

वनेचरा ईश्वरस्य भक्ताः
सहस्रशः सन्ति भूमिभागे
अहं भविष्यामि तस्य भक्तः
प्रमाणितो योऽस्ति भक्तभक्तः

(226)

वयस्यो नास्ति स विषादाद् वरतरः कोऽपीतरः
यो न मुञ्चति प्रपञ्चे मुञ्चत्सु सर्वेष्वपि च माम्

(227)

वयं के ? केन वैवश्येन मार्गेषूपविष्टाः स्मः ?
वदामः, साहसाभावेऽधुना श्रान्तास्तु पान्थाः स्मः

(228)

वर्त्तते मदीयस्थितेर्नानुभवः कश्चित्
ज्ञातमन्यैर्जनैर्निशम्य यद्विषण्णोऽहम् !

(229)

वाण्यां तु सत्य प्रयोगापराधिनो वयम्
दण्डचा वयमपराधश्चेत्सत्यभाषणम्

(230)

वारि सिकतासु कुत्र लप्स्यध्वे ?
मृत्युमुक्तिन्तु कुत्र लप्स्यध्वे ?

(231)

कलियाँ तमाम बागकी खिल जायँ आज ही !
कल तक यहाँ ठहरनेकी फुरसत कहाँ मुझे ? —आसी

(232)

बाजारमें बिकेगा तभी आपका प्रकाश
सूरज को अपने मालका गाहक बताइये —माणिक वर्मा

(233)

हुजूमे गम मेरी फितरत बदल नहीं सकते !
मैं क्या करूँ? मेरी आदत है मुस्कुरानेकी !

(234)

मुसीबत में न घबरा, कर गुजर, जैसे बने वैसे
ये दिन भी जायँगे एक दिन, वो दिन भी आयँगे एक दिन

(235)

मजाहिब क्या हैं ? राहें मुख्तलिफ हैं एक मंजिलकी
है मंजिल क्या ? जहाँ सब कुछ, मगर राहें नहीं होतीं

(236)

सफाई थी, सचाई थी, पसीनेकी कमाई थी
हमारे पास ऐसी ही कई कमियाँ रहीं बाबा ! —कुँअर बेचैन

(237)

गमों पर तबस्सुमका पर्दा पड़ा है
हँसी लबपे है और मसर्रत नहीं है !

(238)

सैर कर दुनियाकी गाफिल ! जिंदगानी फिर कहाँ ?
जिंदगी भी कुछ रही तो नौजवानी फिर कहाँ ?

(239)

सो जाते हैं फुटपाथ पर अखबार बिछा कर
मजदूर कभी नींदकी गोली नहीं खाते !

(231)

विकसन्तु सर्वकलिकास्तत्कालमुपवने !
दिनयुगलमवस्थातुमस्ति मेऽवसरः क्व ?

(232)

विक्रीयते तदैव चापणे भवद् - द्युतिः
सूर्यः स्वकीयग्राहको यदैव घुष्यते !

(233)

विपत्कृतं परिवर्त्तनमसम्भवं प्रकृतेः !
स किं करोतु मानवः स्मितस्वभावो यः

(234)

विपदि खिद्यस्व मा, निर्वह यथापि भवेत्तथापि त्वम्
असौ यास्यति पुनःकालः, कदाप्यायास्यति स कालः

(235)

विभिन्नाः सम्प्रदायाश्चैकगन्तव्यस्य पन्थानः
ससर्वस्वं हि गन्तव्यम्, परन्तु न यत्र पन्थानः

(236)

विशुद्धिः सत्यता श्रमशीलता चैते गुणा आसन्
समीपेऽस्माकमवसन्नभावास्तादृशा भो भिक्षो !

(237)

विषादेषु पतिता यवनिका स्मितस्य
मुखे हास्यलास्यं सुखं नास्ति चित्ते !

(238)

विश्वयात्रां कुरु प्रमादिन्! जीवनं पुनरिह कुतः ?
शिष्टमपि चेज्जीवनं नवयौवनं पुनरिह कुतः ?

(239)

विस्तीर्य समाचारपत्रमत्र शेरते
श्रमिकाः कदापि निद्रागुलिका न भुञ्जते !

(240)

मेरी बात सुनती हो इस तौरसे
कि कहता हूँ गोया किसी औरसे ! —हसरत

(241)

औरको देख वो नहीं सकते
कि जिनमें खुदनुमाई होती है —जफर

(242)

कोर्स तो शब्द ही सिखाते हैं
आदमी आदमी बनाते हैं ! —अकबर इलाहाबादी

(243)

बाकी है अभी तर्के तमन्नाकी आरजू
क्योंकर कहूँ कि कोई तमन्ना नहीं मुझे ? —गालिब

(244)

रोशनी पीकर बहुत-से मर गये यह न्यूज हैं
पर अँधेरोंमें हमेशा मुस्कुराना है हमें —अहद प्रकाश

(245)

'जफर' रहा वो बशर खूब अव्वलो आखिर
जो खाक पीछे हुआ, खाकसार पहले हुआ —जफर

(246)

यह मुद्दत हस्तीकी आखिर यूँ भी तो गुजर ही जायेगी
दो दिनके लिए मैं किससे कहूं-'आसान मेरी मुश्किल करदे' -नातिक

(247)

यूँ मुसीबतमें रहो तो बात है
गोया तुमपे कुछ मुसीबत ही नहीं ! —नश्तर हंगामी

(248)

कल सती होकर जली थी, आज पतिके हाथ
बन गई जीवित जलानेकी प्रथा औरत ! —जहीर कुरैशी

(240)

व्यथा श्रूयते मामकीना त्वया
यथा संलपेऽहं कयाऽप्यन्यया !

(241)

शक्यते तैर्न चापरो द्रष्टुम्
येषु स्वात्मप्रदर्शनाकाङ्क्षा

(242)

शब्दमात्रन्तु शिक्षयति ग्रन्थः
मानवो मानवं विनिर्माति !

(243)

शिष्टा हि कामनायास्त्यागस्य कामना
कथयामि कथं कापि कामना तु नास्ति मे ?

(244)

श्रूयते बहवो मृताः पीत्वा प्रकाशं मानवाः
अन्धकारे तथाप्यस्माभिः सदा कार्यं स्मितम्

(245)

स एव कथ्यतेऽत्र प्रथमश्चरमश्च नरः
विनीत आरम्भेऽभवद्यो मृतः पश्चात्

(246)

सकलोऽप्यवधिर्व्यत्येष्यति सः, व्यत्येत्यधुनापि यथैव तथा
दिनयुग्मकृते कथयामि च कम्, "सरलीक्रियतां मम काठिन्यम्!"

(247)

सङ्कटे वः प्रशंसे यदि स्थीयते
नास्ति किञ्चित्सङ्कटं निकटे यथा !

(248)

सतीत्वेन पुरा दग्धा, दह्यते पत्या
दृश्यते सा जीविता दहनप्रथा वामा

(249)

मंजिलें उससे बहुत ही दूर रहती हैं'कुँअर'
राह पर जो भी यहाँ डर कर चले, रोकर चले ! कुँअर वेचैन

(250)

माशूकोंसे आँख लड़ाना सबके बसकी बात नहीं
चौराहों पर जूते खाना सबके बसकी बात नहीं —शोला

(251)

जिंदगीभर जो अभावोंका धुआँ देता रहा
वक्त ने कैसा 'दिया' तुमको दिया अब्बा मियाँ ! –माणिक वर्मा

(252)

जितनी यादें हैं वो सब पाँवकी जंजीरें हैं
आगे बढ़ना है तो पीछे न पलटके देखो —कुँअर वेचैन

(253)

देशमें यूँ तो सब कुछ है लेकिन
बस, करेक्टर सफा हो गया है ! —हुल्लड़ मुरादाबादी

(254)

मुसाफिर वो है जिसका हर कदम मंजिल की जानिब हो
मुसाफिर वो नहीं, जो चलके थोड़ी दूर रुक जाये

(255)

एकसे करता नहीं क्यों दूसरा कुछ बातचीत ?
देखता हूं जिसे वो चुप-चुप तेरी महफिलमें है! —बिस्मिल

(256)

मजहबने पुकारा ऐ अकबर !
अल्लाह नहीं तो कुछ भी नहीं
यारों ने कहा-यह कौल गलत
तनख्वाह नहीं तो कुछ भी नहीं! -अक. इलाहाबादी

(249)

सदा गन्तव्यानि तस्माद्दूरतस्तिष्ठन्ति भोः
योऽपि पान्थस्सुमार्गे भीत्वा रुदित्वा पर्यटेत् !

(250)

सदा प्रियाभिर्नेत्ररञ्जनं कर्त्तुमनर्हाः सर्वजनाः
मार्गे पादत्राणप्रहारं सोढुमनर्हाः सर्वजनाः

(251)

सदा येनाभावधूमो जीवने निस्सारितः
कीदृशः कालेन दत्तः प्रदीपो भो भोः पितः !

(252)

सन्ति या याः स्मृतयः पादशृङ्खलास्तास्ताः
पश्य मा परावृत्य पुरोगमनमिष्टञ्चेत्

(253)

सन्ति सर्वाणि वस्तूनि देशे
केवलं सच्चरित्रं विनष्टम् !

(254)

स पान्थो यस्तु प्रत्येकं पदं गन्तव्यदिशि धत्ते
स पान्थो नास्ति यो मार्गे चलित्वा किञ्चिदिह तिष्ठेत्

(255)

सभायां सम्भाषते केनापि नान्यतरः कथम् ?
दृश्यते तूष्णीं स्थितः सः दृष्टिपथमायाति यः!

(256)

समयेन यदुक्तमकब्बर ! भोः
यदि नास्ति प्रभुर्न हि किञ्चिदपि
त्रुटिपूर्णमिदं कथितं सुहृदा
यदि नास्ति भूतिर्न हि किञ्चिदपि!

(257)

तर्के तअल्लुकातको एक लम्हा चाहिये
लेकिन तमाम उम्र मुझे सोचना पड़ा ! —फना निजामी

(258)

हो न हो वो आदमीकी शक्लमें इक साँप था !
वर्ना मुझको छोड़ क्यूँ जाता वो केंचुल की तरह ? —कुँ. बेचैन

(259)

आदत है हमें बोलनेकी तौल-तौल कर
है एक - एक लफ्ज बराबर वजनके साथ ! —कृष्णानन्द सोख्ता

(260)

प्यासे होठोंसे जब कोई झील न बोली बाबूजी !
हमने अपने ही आँसूसे आँख भिगोली बाबूजी ! —कुँअर बेचैन

(261)

हर तरफ ऐतराज होता है
मैं अगर रोशनीमें आता हूं —दुष्यन्तकुमार

(262)

दोस्त इस दुनियामें सच्चा उसको होता है नसीब
याने जिसमें दोस्त बननेकी लियाकत खुद भी हो

(263)

जिसको चाहें, खरीद सकते हैं
अब हमारे भी पास पैसा है ! —साहिर शेवी

(264)

लो जान लुटाकर भी जो इल्मोहुनर मिले
जिससे मिले, जहाँ से मिले, जिस कदर मिले !

(265)

हजारों नबी हैं, हजारों मजाहिब
सभी में भरा है खुदाई खजाना —स्वामी सत्यभक्त

(257)

सम्बन्धभञ्जनार्थमलं केवलं क्षणम्
आयुः समस्तमेव किन्तु चिन्तने गतम्

(258)

सम्भवेत्सः कोऽपि सर्पो मानवाकृतिधारकः !
अन्यथा मामत्र त्यक्त्वा व्रजेत्कञ्चुकवत्कथम् ?

(259)

सम्यग्विमृश्य कथनमस्मदीयस्वभावः
प्रत्येक उक्तशब्दोऽस्ति महत्त्वपूरितः!

(260)

सरसी काचित्पिपासिताधरयुगं नावदत् बाबूजी !
अहमश्रुभिः स्वकीये नेत्रे क्लिन्ने कृतवान् बाबूजी !

(261)

सर्वतो जनो भवत्यसन्तुष्टः
किञ्चिदपि चेल्लभे यशो लोके

(262)

सर्वथा तेनैव मित्रञ्जगत्यस्मिल्लभ्यते
मित्रतायाः पात्रता स्याद् यस्य स्वीये मानसे

(263)

सर्वमिष्टन्तु शक्नुमः क्रेतुम्
साम्प्रतमभूम भो वयं सधनाः

(264)

सर्वं दत्त्वाऽऽददतु सुविद्याकलायुगम्
तद् येन मिलेद् यत्र मिलेद् यथा वा मिलेत् !

(265)

सहस्राणि गुरवस्तथा सम्प्रदायाः
भूतन्तेषु परमात्मनः सन्निधानम्

(266)

चेहरोंके साथ था तो 'कुँअर' दौड़ता रहा
वो आईनोंके साथमें रहकर पिछड़ गया —कुँअर बेचैन

(267)

मजहबोंकी बहस मैंने की ही नहीं
फालतू अक्ल तो मुझमें थी ही नहीं —अकबर इलाहाबादी

(268)

शामको गिरता है तो सुबह सँभल जाता है
आप सूरजकी तरह गिरके सँभलते रहिये —कुँअर बेचैन

(269)

क्यों न बढ़ता हौसला फिर जुल्मके नाखूनका ?
जब कि नुचनेके लिए खुद मांस ही तैयार है ! —कुँअर बेचैन

(270)

एक कवि ही था, कहा जिसने उसे श्रद्धा
आम मर्दोंने सदा ली अन्यथा औरत —जहीर कुरैशी

(271)

सुख, जैसे बादलोंमें नहाती हों बिजलियाँ
दुख, बिजलियोंकी आगमें बादल नहा लिये —कुँअर बेचैन

(272)

खुशीकी आह हमने तो बड़ी कीमत चुकाई है
जरा-से मुस्कुराये थे कि फिर रोया किये बरसों ! —सुमन कुशवाह

(273)

ढूँढ़ी शरीफजादोंके घर पर बहुत मगर
तहजीबकी किताब तवायफ के घर मिली ! —कँवल सरहदी

(274)

मुसाफिर अपनी मंजिलपर पहुंचकर चैन पाता है
वे मौजें सर पटकती हैं, जिन्हें साहिल नहीं मिलता ! -म. देहलवी

(266)

साकन्तु पराकृतिभिर्धोवन्नासीद् यः
सह दर्पणैरभूत्सः प्रगतेः पराङ्मुखः

(267)

साम्प्रदायिकविवादो न कश्चित्कृतः
मस्तके मेऽतिरिक्ता न चासीन्मतिः

(268)

सायमस्तङ्गच्छत्युदयति प्रातः काले
भूय एवोन्नमतु पतित्वाऽत्र भास्करवत्

(269)

साहसे वृद्धिर्न किं स्यादनाचारनखस्य भोः ?
छिन्नतामाप्तुं यदा स्वयमेव मांसस्तत्परः !

(270)

सुकविनैकेनोक्तमासीदस्ति सा श्रद्धा
इतरपुरुषैर्या गृहीता अन्यथा वामा

(271)

सुखमस्ति यथा वारिदेषु स्नान्ति विद्युतः
दुःखन्तु विद्युदग्नौ स्नान्तीव वारिदाः

(272)

सुखं विषयस्य भुक्त्वाऽस्माभिरिह दत्तं महामूल्यम्
अकुर्म स्मितं किञ्चित्ततोऽनारतमास्म क्रन्दन्तः !

(273)

सुजनालये चिरं गवेषितस्य सभ्यता-
ग्रन्थस्य प्राप्तिरभवद् वाराङ्गनागृहे!

(274)

सुपान्थः प्राप्य गन्तव्यं सुखं प्राप्नोत्यनिर्वाच्यम् !
तरङ्गैः *कानि धूयन्ते तटं नाप्तं स्वकीयं यैः !

---

*कानि - शिरांसि ।

(275)

लहूलुहान नजारोंका जिक्र आया तो
शरीफ लोग उठे, दूर जाके बैठ गये —दुष्यन्तकुमार

(276)

मैं रवायतके बन्द कमरे में
बन्द कैसे रहूं कि खुशबू हूं? —कृष्णमोहन

(277)

इरादे बाँधता हूं, सोचता हूं, तोड़ देता हूं!
कहीं ऐसा न हो जाये, कहीं वैसा न हो जाये!

(278)

हौसलोंसे सहे यूँ सितम
जुल्मकी उम्र होती है कम

(279)

सीनेपर सौ वार सहे जब दुश्मनकी तलवार उठी
हिम्मत उस दिन टूटी, जिस दिन आँगनमें दीवार उठी! रईस अनवर

(280)

रहती है कब बहारे जवानी तमाम उम्र ?
मानिन्द बू-ए-गुल इधर आई, उधर गई !

(281)

बहते हुए आँसूने आँखोंसे कहा थम कर—
"जो मयसे पिघल जाये वो जाम नहीं होता !" —मीनाकुमारी

(282)

वो अपनी जिंदगीमें बन्दगी क्यूँ लाजिमी समझे ?
जो अपनी जिंदगीको ही मुसलसल बन्दगी समझे !

(283)

जो भी अपना मिला, बनके सपना मिला
हर खुशी आँसुओंमें नहाती रही —निदा फाजली

(275)

सुरक्त - रञ्जितदृश्याणां चर्चाकाले
सुसभ्यजनाः समुत्थाय दूरमुपविष्टाः

(276)

सुरभिपूर्णोऽप्यहं कथं बन्दी
रूढिकक्षे वसान्यसन्तुष्टः ?

(277)

सुसङ्कल्पान् करोमि विचारयामि परित्यजामि पुनः!
भवेन्नैतादृशं किञ्चित्क्वचिन्न च तादृशं किञ्चित् !

(278)

सोढमस्माभिरनिशं यतः
स्वल्प एवास्ति त्रासावधिः

(279)

सोढाः शतप्रहारा वक्षसि मया समक्षं रिपौ स्थिते
किन्तु साहसं सहसा भग्नं यदाङ्गणे भित्ती रचिता!

(280)

स्थायी तु कस्य भवति यौवनस्य वसन्तः ?
आगत्य इतो गतस्तत्र पुष्पसुरभिवत् !

(281)

स्थित्वा क्षणमक्षिभ्यां स्रवताश्रुणैतदुक्तम्
"मद्येन यो द्रवेत्सोऽर्हति नो भवितुं चषकः !"

(282)

स्वकीयञ्जीवनम्भूयान्निरन्तरवन्दनं यस्मै !
पृथग्वन्दनं सः कुत्रापि कथमनिवार्यमवगच्छेत् ?

(283)

स्वप्नवन्मां स्वकीयोऽमिलद् यत्सुखम्
अश्रुवर्षासु तत्स्नापयत्स्नापयत्

(284)

एक दिन ये सब कँटीले बन स्वयं जल जायँगे
आगके कुछ बीज हैं, जो हम स्वयं बोकर चले —कुँअर बेचैन

(285)

उम्रभरका है तजुर्बा अपना
शायरी उम्रभर नहीं आती ! —फिराक गोरखपुरी

(286)

कश्तियाँ जलते मरुस्थलमें चलाकर देखिये
इस जमानेमें ऊसूलोंको निभाकर देखिये —शिव ओम अम्बर

(287)

अपने पावोंको न इतना फूल-सा कोमल बना
जो तेरे पाँवों में तेरा रास्ता चुभने लगे ! —कुँअर बेचैन

(288)

तुम सलामत रहो हजार बरस
हर बरसके हों दिन पचास हजार —गालिब

(289)

शादीमें भी कुछ गमके पहलू निकल आते हैं
बेसाख्ता हँसने में आँसू निकल आते हैं

(290)

वक्त चुरा ले जायेगा
ये जो तबस्सुम लब पर है ! —अमीर कजलबाश

(291)

दिल दे तो इस मिजाजका परवरदिगार ! दे
जो रंजकी घड़ी भी खुशीसे गुजार दे

(292)

औरोंके दिलको जीतना मुश्किल नहीं 'कुँअर'
तनसे अहं भरा जो तेरा सर कटा रहे ! —कुँअर बेचैन

(284)

स्वयं कण्टकगणो ज्वलिताऽवश्यमेकस्मिन् दिने
वह्निबीजानीह क्षिप्त्वा यतो गच्छामो वयम्

(285)

स्वानुभूतिं वदामि नोऽतथ्यम्
काव्यमाजीवनं न संसिद्धम् !

(286)

स्वीयनौकाश्चालयित्वा पश्यतु ज्वलिते मरौ
सत्यनियमान् पालयित्वा प्रेक्षतामस्मिन् युगे

(287)

स्वीयपादयुगं कुसुमवत्तथा मा कुरु कोमलम्
पादयुग्मे यथा स्वीये त्वदीयो मार्गस्तुदेत् !

(288)

हर्षमनुभव सहस्रवर्षाणि
सम्भवेच्छतसहस्रदिनवर्षम्

(289)

हर्षेऽपि विषादानां छाया विलोक्यतेऽसौ
जाते महाट्टहासे जायेत चाश्रुपातः

(290)

हृत्वा तन्नेष्यति कालः
यदधरयुग्मे तव हास्यम्!

(291)

हृद्यं हृदयं देहि मे रमेश ! तादृशम्
यच्छोककालमपि सदा मुदैव यापयेत्

(292)

हृद्विजयोऽसाध्यो न परेषामिह किञ्चित्
छिन्नं भवेद् यदहङ्कारपूरितं शिरः !

(293)

मैं खुश हुआ, जो आपने दीं मुझको गालियाँ
अच्छा हुआ,बुखार तो दिलका निकल गया ! —अकबरइलाहाबादी

(294)

ज़ालिमोंका सर तो काटा जा भी सकता हैं'कुअर !'
जुल्मका सर काटने वाली कटारी अब कहाँ ?—कुँअर वेचैन

(295)

कल नुमाइशमें मिला वो चीथड़े पहिने हुए
मैंने पूछा नाम तो बोला कि हिन्दुस्तान है —दुष्यन्तकुमार

(296)

न जाने कौन-सा पल मौतकी अमानत हो
हर एक पलकी ख़ुशीको गले लगाके जिओ

(297)

जरा यह सोच कि गुजरेगी उस गुलाबपे क्या ?
जो शाखपर तो रहे, गन्धसे बिछुड़ जाये ! —कुँअर वेचैन

(298)

सह लिया सब कुछ न लबसे आह की !
किसने कब तेरी कोई परवाह की ? —अनिल उदित

(299)

देखता ऐबो हुनर औरका है सब कोई
अपना मालूम जफर ! ऐबो हुनर किसको है ? —जफर

(300)

हम जानते थे इल्मसे कुछ जानेंगे
जाना तो ये जाना कि न जाना कुछ भी !

(293)

हृष्टोऽभवं यतस्त्वयोच्चरिता गालयः
जातं तु वरं निरगच्छन्मानसो ज्वरः !

(294)

हे कुँअर् ! मस्तकं छेत्तुं शक्यतेऽप्यपराधिनाम्
छिद्यते येनापराधः कुत्र खड्गः सोऽधुना ?

(295)

ह्योऽमिलत्सः प्रदर्शिन्यां जीर्णवस्त्रैरावृतः
नाम तमपृच्छं तदा सः स्वकमकथयद् भारतम्

(296)

क्षणो न जाने भविता को मृत्योर्न्यासः
प्रतिपलजन्यसुखं समुपभुज्य जीव सदा

(297)

क्षणं विचारय तत्पाटलपुष्पस्य दशाम् ?
सुगन्धहीनं समजायत यद् वृन्तस्थम् !

(298)

क्षान्तमेव न विलपितं किञ्चित्त्वया !
किन्तु केन कदावधानं त्वयि कृतम् ?

(299)

ज्ञायते केन जफर ! स्वीयो गुणदोषगणः
दृश्यते सोऽन्येषामिह न किं सुखं सर्वैः ?

(300)

ज्ञातास्मि किमपि विद्यया पुरा ज्ञातम्
ज्ञातं परन्तु मया किमपि न ज्ञातम्

(इति श्रेयः खण्डः)

शुद्धिपत्र

□ कृपया इस पुस्तक पढ़ने से पहले निम्नलिखित त्रुटियाँ ठीक करलें।

पद्यक्रमांक	अशुद्ध	शुद्ध	पद्यक्रमांक	अशुद्ध	शुद्ध
38	विकृयार्थं	विक्क्रयार्थं	187	मुक..	मूक..
69	वावछूरो	वाक्छूरो	203	नीचेस्तु	नीचैस्तु
,,	भाषने	भाषते	204	सुवद्ध	सुबद्ध
72	मुप धान	मुपधान	223	तोयां	तायां
79	चाश्तुवद्	चाश्रुवद्	229	सत्य प्र..	सत्यप्र..
88	कुदि शा..	कुदिशा..	243	कायनाया	कामनाया
96	कश्चिन्त	कश्चिन्न	247	किञ्च्च..	किञ्चि..
108	सर्वेऽपिज	सर्वेऽपि ज	258	त्यवत्वा	त्यक्त्वा
110	किं भो	किं कृतं भो	शेर क्रमांक	अशुद्ध	शुद्ध
119	तारूण्ये	तारुण्ये	2	दिवार	दीवार
136	दग्ध्वाभक्ष..	दग्ध्वा भक्ष..	9	रूला	रुला
139	भाराछे..	भाराच्छे..	11	औरों	औरों
,,	भित्तिव्छाया..	भित्तिच्छाया..	100	मरुस्थल	मरुथल
143	पश्तन्तु	पश्यन्तु	111	हमकों	हमको
161	मित्मा	मित्या	150	मूरतमें	मूरतमें भी
173	वार्त्तांव..	वार्त्तां व..	211	माँगेगे	माँगेंगे
174	ववत्री	वक्त्री	287	पावोंमें	पाँवोंमें
177	दृष्टोमया	दृष्टो मया	294	कुअर	कुँअर

कुलदीप प्रकाशन

२६१, ताम्बावती मार्ग,

उदयपुर - ३१३००१

प्रकाशित कृतियाँ	मूल्य
सत्य सुधा	(अप्राप्य)
छन्दों के छींटे	"
बीस सूत्री कार्यक्रम - बीस कवित्त	"
कवि एक रस अनेक	"
गुदड़ी के लाल १९८७	"
निम्बाहेड़ा का इतिहास	१५) रु.
श्रीसाँवरिया भजनावली	२) रु.
गुदड़ी के लाल १९८८	१०) रु.
कवि एक - रस अनेक (द्वितीय)	१०) रु.
जयन्तसेन गुरु गुण गाथा	१०) रु.
शाश्वत-स्वर	२१) रु.
अशआर - रसधारः	१०) रु.

अनुवादक - परिचय

शान्तप्रकाश 'सत्यदास'

❀ उत्तीर्ण परीक्षाएँ : काव्यतीर्थ, राष्ट्रभाषापण्डित,
एम.ए. (संस्कृत + राजनीति), बी.एड्. ।

❀ भाषाज्ञान : संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, मराठी, गुजराती,
उर्दू, राजस्थानी ।

❀ व्यवसाय : संस्कृत - अध्यापन (पिछले ३७ वर्षों से)
साहित्यसम्पादन (७२वीं पुस्तक का सम्पादन चल रहा है) ।

❀ रचनाएँ : हमारी भ्रान्तियाँ (१७५ पृष्ठोंकी पुस्तक),
३५० से अधिक मुक्ताएँ, ५० से अधिक कविताएँ,
८० से अधिक लेख, चिन्तनतनया (सौ सूक्तियाँ),
७५० से अधिक शेरोंके संस्कृत पद्यानुवाद आदि ।

❀ पारदर्शी प्रिन्टर्स, आयड़, उदयपुर-313001 ❀